सामाजिक अध्ययन

हमारा देश--भारत

भाग २

शिक्षक-दर्शिका

पाठ्यपुस्तक विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्राक्कथन

'हमारा देश—भारत', भाग १ और २ नामक पाठ्यपुस्तकें क्रमश: कक्षा ३ और ४ के लिए है। इन पुस्तकों को विशेष रूप .मे केंद्रीय विद्यालयों की तरह के अखिल भारतीय विद्यालयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, किंतु थोड़ा परिवर्तन करके अलग-अलग राज्यों मे भी इन पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग किया जा सकता है। ये पुस्तकें प्राथमिक कक्षाओं के लिए तैयार की गई सामाजिक अध्ययन की पुस्तक-माला का एक भाग है। इस पाठ्यपुस्तक माला में जिस मौलिक बात पर बल दिया गया है, वह है—"हमारा देश व उसकी एकता"। बच्चों में स्वस्थ सामाजिक भाव तथा राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने की ओर भी इसमें यथासंभव बल दिया गया है।

कक्षा ३ और ४ की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित शिक्षक-दर्शिकाएँ अध्यापकों के लिए लिखी गई हैं। ये दर्शिकाएँ शिक्षकों को साधारणतया इन पुस्तकों की मौलिकता से, विशेषकर इनके प्रमुख उद्देश्यों से, अवगत कराने में सहायक होंगी। दर्शिकाओं में पाठ्यपुस्तकों के शिक्षण से संबंधित सभी बातों पर विस्तार से विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक अध्ययन को सुचारु ढग से पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव भी दिए गए हैं। शिक्षण के ये सभी सुझाव केवल सांकेतिक हैं, शिक्षक के लिए अनिवार्य नहीं। अपनी स्थानीय अथवा वैयक्तिक आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षक इनमें फेर-बदल कर सकते है अथवा इनमें से कुछ चुन सकते है। इसके अतिरिक्त वे पढ़ाने के अन्य नए ढंग तथा क्रियाएँ सोचने में और अपनाने में भी पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

इन शिक्षक-दर्शिकाओं को तैयार करने मे डॉ० रवींद्र दवे, श्रीमती आदर्श खन्ना, श्री चंद्र भूषण और श्री चंद्र प्रकाश राय भटनागर ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। मैं अपने इन सभी सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ कि इन दर्शिकाओं से शिक्षकों का उचित मार्ग-दर्शन होगा और उनको अपने दैनिक शिक्षण-कार्य में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
मई, १९७१

सं० वि० चंद्रशेखर अय्या
निदेशक

विषय-सूची

खंड ३

खंड ४

खंड ५

कुछ सामान्य बातें

सामाजिक अध्ययन

स्वतंत्रता के बाद हमने सर्वसम्मति से गणतांत्रिक जीवन अपनाया है। इसलिए हमें अपने देश के भावी नागरिकों में वे जानकारियाँ, कुशलताएँ और मान्यताएँ पैदा करनी हैं, जिनसे वे स्वतंत्रता की जिम्मेदारियों को सँभाल सकें, अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को समझें और देश के अच्छे नागरिक और समाज के योग्य सदस्य बन सकें। वैसे तो घर, परिवार, पास-पड़ौस, धार्मिक समुदाय आदि, सभी अच्छी नागरिकता के विकास में सहायता देते है, लेकिन शिक्षण संस्थाएँ अच्छे नागरिक तैयार करने में सबसे अधिक मदद करती हैं। अच्छी नागरिकता की पक्की नींव वास्तव में प्राथमिक पाठशालाओं में ही पड़ती है। पाठ्यक्रम का प्रत्येक विषय बच्चों में उचित धारणाएँ और कुशलताएँ उत्पन्न करने में सहायक होता है और उनके व्यक्तित्व का विकास करता है, लेकिन इस संबंध में सबसे बड़ा योगदान शायद सामाजिक अध्ययन का है। यह विषय आजकल हमारे स्कूलों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता है। इसलिए सामाजिक अध्ययन पढ़ाने वाले अध्यापक के ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है।

सामाजिक अध्ययन क्या है ?

सामाजिक अध्ययन का अर्थ बहुत व्यापक है। विभिन्न व्यक्ति इसकी भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषा करते है, किन्तु इसमें **'सामाजिक'** शब्द सबसे अधिक महत्त्व का है। इस विषय का केन्द्र 'मानव' ही है। इसमें मुख्य रूप से मानव और उसके सामाजिक व भौतिक वातावरण का पारस्परिक प्रभाव तथा मानवीय संबंधों का अध्ययन सम्मिलित है। इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान और कला आदि इस विषय की पाठ्यवस्तु के स्रोत हैं।

सामाजिक अध्ययन अपनी पाठ्यवस्तु के माध्यम से बच्चों को समाज में सफलता से रहना सिखाता है। यह समझने में भी सहायता देता है कि मनुष्य अपने वातावरण अर्थात अपने गाँव, शहर, पास-पड़ौस, देश और संसार के भौतिक वातावरण में किस प्रकार रहता है और काम करता है तथा परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व से उसका क्या संबंध है।

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। मानव जीवन की सभी बातें इसके अंदर आ जाती हैं। इस विषय का महत्त्व और इसकी व्यापकता समझने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

१. छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार करना पाठशालाओं का प्रमुख कर्त्तव्य है। इसलिए उनको कुछ ऐसी जानकारियाँ देनी है और उनमें कुछ ऐसी भावनाएँ पैदा करनी हैं जो उन्हें अपने वातावरण में खपने में सहायता देंगी। आजकल संसार में रोज ही परिवर्तन हो रहे है। इन परिवर्तनों की जानकारी की नींव पाठशाला में ही डालनी है।

   जिस वातावरण में बच्चा जन्म लेता है और पलता है, वह प्राकृतिक और सामाजिक परिस्थितियों के योग से बनता है। वातावरण का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सामाजिक अध्ययन द्वारा हम छात्रों को इस वातावरण से परिचित कराते हैं। साथ ही साथ उनमें कुछ ऐसी कुशलताएँ पैदा करना चाहते है जो आगे चलकर उन्हें नागरिक जीवन में सहायता देंगी।

२ हम स्वतंत्र हैं। स्वतंत्र नागरिक के अधिकारों के साथ-साथ हमारी कुछ जिम्मेदारियाँ भी हैं। इन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए हमें कुछ बातें जाननी हैं और अपने अंदर कुछ भावनाएँ पैदा करनी है। सामाजिक अध्ययन छात्रों को एक ओर तो ज्ञान देता है और दूसरी ओर उपयुक्त क्रियाओं की सहायता से उनमें उचित भावनाओं और आदतों की नींव डालने का प्रयत्न करता है।

३. हम अपने देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने के लिए नए-नए कदम उठा रहे है। इस संबंध में विकास योजनाएँ बनाई जा रही हैं। बच्चों को इन योजनाओं की प्रारंभिक जानकारी होना आवश्यक है। आगे चलकर अच्छे नागरिक के रूप में वे इस कार्य में पूर्ण सहयोग देंगे।

४. 'वर्तमान' को समझने के लिए बीते हुए जमाने की जानकारी जरूरी है। देशभक्त समझदार नागरिक बनने के लिए देश के गौरवमय अतीत का ज्ञान भी होना चाहिए। अतः इतिहास की कहानियाँ, महापुरुषों की जीवनियाँ इस विषय में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि इतिहास पुराने समय की कथा-मात्र नहीं है। वर्तमान के संबंध से ही वह सजीव हो उठता है।

५. शांतिमय जीवन व्यतीत करने के लिए संसार के लोगों में आपसी सहयोग और सद्भावना

आवश्यक है। सामाजिक अध्ययन द्वारा हम बच्चों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना का बीजारोपण करते हैं।

६. प्राथमिक पाठशाला का विषय होने के नाते सामाजिक अध्ययन बच्चों की रुचियों और आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखता है। इसी दृष्टि से उसकी पाठ्यसामग्री चुनी जाती है। अध्यापन की विधियों को भी बच्चों की रुचि और आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए। अगले पृष्ठों में इसका सकेत मिलेगा।

वर्तमान पाठ्यक्रम

पाठशाला के पाठ्यक्रम की कुछ सीमाएँ होती है। सभी बातें उसमें शामिल नही हो सकती। निर्धारित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कुछ बातो पर अधिक बल देना होता है और कुछ को छोड़ना पड़ता है।

वर्तमान पाठ्यक्रम जिस मौलिक बात पर आधारित है, वह है 'हमारा देश और उसकी एकता' साथ ही, इसमें देश की भावी आशाओं और हमारे कर्त्तव्यों पर भी जोर दिया गया है। सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम में भिन्न-भिन्न पहलुओं से इस बात पर बल दिया गया है यद्यपि प्रत्येक कक्षा की मुख्य विषय-वस्तु अलग-अलग है :

कक्षा १. : हमारा घर और पाठशाला

कक्षा २. : हमारा पास-पड़ौस

कक्षा ३. : हमारा राज्य और हमारा देश भारत

कक्षा ४. : हमारा देश भारत

कक्षा ५. : भारत और संसार

सामाजक अिध्ययन पढ़ाने के उद्देश्य

किसी भी विषय को ठीक तरह से पढ़ाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि हम उसे किस उद्देश्य से पढ़ा रहे हैं। हम उस विषय के शिक्षण द्वारा बच्चों के ज्ञान, उनकी वैयक्तिक कुशलता, उनकी समझ, उनकी आदतों और क्षमताओं में क्या परिवर्तन लाना चाहते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में सामाजिक अध्ययन पढ़ाने के कुछ मुख्य उद्देश्य नीचे दिए जा रहे हैं। इस विषय को पढ़ाते और मूल्यांकन करते समय इन उद्देश्यों को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। कक्षा ५ के अंत तक

(क) बच्चों को निम्नलिखित बातें जान लेनी चाहिए :

१. संसार के सभी मनुष्यों की मूल आवश्यकताएँ—भोजन, कपड़ा और रहने का स्थान-एक-सी

हैं । वे इन आवश्यकताओं को दूसरों की सहायता से पूरा करते हैं ।

२. मनुष्य के जीवन का भौतिक वातावरण से घनिष्ठ संबंध है । उसकी जीवन-क्रिया बहुत कुछ इसी वातावरण से प्रभावित होती है, लेकिन वह अपने प्रयत्न से वातावरण को भी अपनी आवश्यकताओं के अनकूल बना लेता है ।

३. प्राकृतिक साधनों जैसे मिट्टी, पानी, वन, खनिज पदार्थ आदि के उपयोग द्वारा ही मनुष्य का जीवन संभव है । इन साधनों का ठीक उपयोग करना और उनकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है ।

४. मनुष्य समाज में रहता है । वह हर बात के लिए दूसरों पर निर्भर होता है । परिवार में प्रत्येक व्यक्ति, देश मे प्रत्येक राज्य और संसार मे प्रत्येक देश, एक दूसरे पर निर्भर है । सहयोग के बिना किसी का कोई भी कार्य नहीं चल सकता ।

५. समाज में मनुष्य का शांतिमय और सुचारु जीवन परस्पर-सहयोग, सद्भावना, विश्वास और दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व निभाने की भावना पर आधारित है ।

६. भारत अब गणतंत्र है । गणतंत्र में सभी नागरिक बराबर हैं, सभी के अधिकार और कर्त्तव्य एक-से है । इसे इनको जानना चाहिए और ईमानदारी से इनका पालन करना चाहिए ।

७. हमारे देश के विभिन्न भागों में लोगों की भाषाएँ भिन्न-भिन्न हैं, उनके भोजन और वस्त्र अलग अलग है । और वे भिन्न-भिन्न धर्मो को मानते हैं । इन सब विभिन्नताओं के होते हुए भी हम भारतवासी हैं और एकता के सूत्र में बँधे हैं ।

८. हमारे देश की एक अपनी संस्कृति है और हमारी कुछ मान्यताएँ है । इनको बनाए रखने और समय-समय पर इनमें संशोधन करने के लिए अपनी संस्कृति और मान्यताओं का ज्ञान होना हमारे लिए आवश्यक है ।

९. भारतीय सभ्यता को बनाने में हमारे कई महान पुरुषों ने योग दिया है । हमें उनके विषय में भी जानना चाहिए ।

१०. संसार के देशों में बहुत-सी विभिन्नताएँ है लेकिन सभी देश एक ही दुनिया के अंग है । प्रत्येक देश की कुछ न कुछ देन है । हमें संसार के सभी देशों के लोगों को समान दृष्टि से देखना चाहिए और उनके अलग-अलग धर्मों और विश्वासों का आदर करना चाहिए ।

(ख) बच्चों को निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेनी चाहिए :

१. सभा का अन्य सामूहिक कार्यक्रम में दूसरों के साथ मिलकर काम करते समय—

—साफ, शुद्ध और तर्कपूर्ण ढंग से बोलकर या लिखकर अपने विचार प्रकट करना ।

—दूसरों के विचार ध्यान से सुनना ।

—बातचीत में सम्मान-सूचक शब्दों का प्रयोग करना और अपनी बारी पर बोलना।

—अपना उत्तरदायित्व निभाना, दूसरों को सहयोग देना और नेतृत्व कर सकना।

—सभा, अभिनय, वाद-विवाद उत्सव मनाने या किसी अन्य योजना में सक्रिय भाग लेना और सुव्यवस्थित ढंग से काम करना।

—प्रदर्शनी लगाना और चीज़ों को उचित ढंग से सजाकर रखना।

—विभिन्न स्रोतों से आवश्यक सूचना और सामग्री एकत्र करना, उसे सँभालकर रखना, उसका उचित उपयोग करना और उसकी सहायता से छोटी-छोटी रिपोर्ट तैयार करना।

२. पास-पड़ौस अथवा दर्शनीय स्थानों और स्मारकों का भ्रमण करते समय :

—भ्रमण से संबंधित योजना बनाना।

—सबके साथ शिष्ट व्यवहार करना।

—मिलजुल कर काम करना और वस्तुओं को बाँटकर प्रयोग करना।

—यातायात के चिह्नों को पहचानना, सड़क पर चलने के नियमों का पालन करना।

३. मानचित्र, चार्ट, ग्राफ, ग्लोब आदि का प्रयोग करते समय :

—विभिन्न मानचित्रों को पहचानना, पढ़ना और तुलना करना।

—मानचित्रों में विभिन्न स्थानों की स्थानों की स्थिति जानना, दूरी नापना, दिशाएँ मालूम करना, विभिन्न चिह्नों, संकेतों और रंगों को पहचानना।

—ग्लोब और चपटे तल पर बने मानचित्र में अंतर जानना।

—सरल ग्राफ, आरेख आदि पढ़ना।

—साधारण चार्ट और मॉडल बनाना।

—एकत्र किए चित्र, फूल-पत्ती, पत्र-पत्रिकाओं की कतरन आदि को एलबमों में सुरक्षित करके रखना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जागृत हो जाने चाहिए :

१. विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और व्यवसायों के लोगों के प्रति आदर।

२. देश के गौरव और आदर्शों के प्रति सम्मान।

३. देश की एकता का भाव।

४. राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति आदर।

५. राष्ट्र के हित के लिए छोटी-छोटी जिम्मेदारी उठाना।

६. देश की स्वतंत्रता बनाए रखने की प्रबल भावना।

७. निजी व सरकारी संपत्ति तथा देश के प्राकृतिक साधनों की सुरक्षा के लिए स्वेच्छापूर्ण उत्तर-

दायित्व निभाना।

८. कानून और सरकार के प्रति आदर।

९. बड़ों और अध्यापकों के प्रति सम्मान।

१०. पीड़ित और असहाय लोगों के प्रतिसहानुभूति।

११. अंतर्राष्ट्रीयता का भाव।

१२. प्राकृतिक सौंदर्य में रुचि।

१३. परिवर्तन के प्रति जागरूकता।

१४. आत्मनिर्भरता की भावना।

प्राथमिक कक्षाओं के छात्र

प्राथमिक कक्षाओं में पाँच-छ: साल से लेकर ग्यारह-बारह साल तक के बच्चे होते हैं। जब वे पहले-पहल पाठशाला जाते हैं तो उनके मस्तिष्क स्लेट की तरह साफ़ नहीं होते। वे जन्म से ही अपने घर और पास-पड़ौस मे रहते रहे हैं। स्कूल में प्रवेश लेने से पहले ही बच्चों के पास बहुत से अनुभव होते है। इन्हीं अनुभवों के अनुसार वे स्कूल में बर्ताव करेंगे। सभी छात्र बाहरी रूप में एक-दूसरे से बहुत भिन्न होते हैं। कोई लंबा है तो कोई छोटा, कोई मोटा-ताजा है तो कोई दुबला-पतला, कोई शर्मीला है तो कोई चंचल, कोई झगड़ालू है तो कोई चुपचाप रहता है। सभी अपना-अपना अलग व्यक्तित्व लिए हुए है। इतनी भिन्नताओं के होते हुए भी इन बच्चों में बहुत-सी समानताएँ होती हैं। आयु की दृष्टि से तो यह सब बच्चे लगभग समान होते ही है, इनके घर, पास-पड़ौस का सामाजिक वातावरण और इनकी आर्थिक स्थिति आदि भी लगभग एक जैसी होती हैं। स्कूल में आने के बाद इन बच्चों को आपस में घुलने-मिलने तथा साथ रहने के और अधिक अवसर मिलते हैं।

साधारण रूप से पाँच से बारह साल की आयु के बच्चों का विकास बहुत ही शीघ्रता से होता रहता है, लेकिन यह विकास किसी विशेष नियम के अनुसार नहीं होता। किसी का विकास जल्दी हो जाता है और किसी का देर से होता है। फिर भी इस आयु के अधिकांश बच्चों मे कुछ विशेषताएँ सामान्य रूप से अवश्य ही पाई जाती हैं। अध्यापक का यह कर्त्तव्य है कि इन विशेषताओं के प्रकाश में वह अपनी कक्षा के बच्चों को अच्छी तरह जाने समझे। निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान अध्यापक को अपने अध्यापन-कार्य करने और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होगा।

प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों की कुछ विशेषताएँ

१. इस आयु के बच्चों में स्वभाव से ही कौतूहल होता है। उनमें जानने की इच्छा बड़ी प्रबल होती

है। वे जो कुछ देखते है उसी पर प्रश्न पूछते हैं।

२. वे हमेशा किसी-न-किसी काम मे लगे रहना पसद करते है। अपने मन से ही कुछ-न-कुछ बनाते रहते है। बड़ों की नकल करना उन्हे अच्छा लगता है। कोई भी चीज़ मिल जाए, उसके बारे मे फौरन सब कुछ जान लेना चाहते हैं और इसलिए कभी-कभी चीजों को तोड़ भी डालते है।

३. शुरू-शुरू मे वे किसी भी विषय पर अधिक समय तक मन नहीं लगा सकते, लेकिन दो तीन साल बाद, अर्थात कक्षा ३ या ४ में पहुँचकर, कुछ देर तक एक ही काम में मन लगा सकते है।

४. उनकी कल्पना-शक्ति तेज होती है। कल्पना में एक दूसरी दुनिया बना लेना उनके लिए कठिन नहीं है। इसलिए शुरू-शुरू में परियों की कहानी, जानवरों की कहानी आदि उन्हें अच्छी लगती है। वे ये नहीं पूछते हैं कि परियाँ होती भी हैं या जानवर कैसे हमारी तरह बोल सकते हैं। जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं वे पूछने लगते है कि कहानी सच है या झूठ।

५. घर से पहली बार बाहर जाने पर वे कुछ स्वार्थी से दिखाई देते हैं। साथ मिलकर खेल नहीं पाते। अपनी चीजें दूसरोंको नहीं देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद मिलकर काम करने और खेलने की स्वाभाविक रुचि उनमे दिखाई पड़ने लगती है। वे बहुत ही जल्दी दोस्ती कर लेते है।

६. उनके अनुभव कम होते हैं, लेकिन वे नए अनुभवों के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं। केवल बातों की सहायता से वे ज़्यादा नहीं सीख सकते। चीजों को देखकर, सुनकर, सूँघकर, छूकर वे अधिक सीखते है।

७. चीजें एकत्र करना वे बहुत पसंद करते हैं। बड़े जिन चीज़ों को फेंक देते हैं, उन्हें जमा करना उनका बड़ा काम है। इसलिए अक्सर इस आयु के बच्चो के पास रद्दी चीजें भरी होती है। सात-आठ वर्ष के बालक की जेबों और बस्ते में ऐसी चीज़ों का एक खज़ाना होता है।

८. उनमें 'झेंप' का अहसास कम होता है। वे सबके सामने बोल लेंगे। ज़रूरत पड़ने पर हाथों के बल चल लेंगे, जानवरों की बोली बोलेंगे, गाएँगे। उन्हें सफाई करना, कूड़ा उठाना आदि कामों में कोई शर्म नहीं मालूम होती। कोई काम नीचा या ऊँचा है, ये इन भावनाओं से मुक्त होते है।

९. उनमें स्फूर्ति बहुत अधिक होती है। वे बहुत चुलबुले और चंचल होते हैं। चुपचाप बैठना उनके लिए कठिन है जब तक कि किसी विशेष वस्तु में उनका मन न लग जाए।

१०. सभी बच्चे बड़ों की दृष्टि में अच्छे बनना चाहते है। वे बड़ों से अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत खुश होते हैं और नाराज़गी का भी उन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

११. वे बड़ों से प्रेम चाहते हैं। कोई भी काम करें, उसकी तारीफ उनके लिए जरूरी है। जिम्मेदारी

का काम दिया जाए, तो बहुत खुश होते हैं। हर बात में रोक-टोक से हतोत्साह हो जाते हैं, जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं वे दूसरों की राय का आदर करने लगते है। इस समय वे समूह में रहना पसंद करते हैं और मिलजुल कर काम करना, खेलना, गाना उनको बहुत अच्छा लगता है।

१२. उनमें ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होता है। सभी से उनकी दोस्ती आसानी से हो जाती है।

१३. सभी बच्चे जितनी जल्दी हो सके बड़े हो जाना चाहते हैं। इसलिए वे नई बातें, नए काम सीखने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। वे बड़ों के समान काम शुरू से ही करना चाहते हैं और ऐसे काम की जिम्मेदारी लेने के लिए भी तैयार रहते हैं।

१४. स्थूल वस्तु जिसे वे देख सकते है, छू सकते हैं, उन्हे काफी आकर्षित करती है। इन्हीं के सहारे उनकी शिक्षा, उनके अनुभव बढते जाते हैं।

१५. प्रारंभ में इस अवस्था के बच्चों के पास वे साधन नहीं होते जिनसे विधिवत शिक्षा प्राप्त की जाती है। ये साधन वे धीरे-धीरे प्राप्त करते है और उनका प्रयोग सीखते हैं।

बच्चों के विकास की विशेषताओं की यह सूची पूर्ण नहीं है। इसमें केवल उन्हीं विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है जो इस आयु के बच्चों में साधारण रूप से पाई जाती है और जिनका उपयोग शिक्षण-प्रक्रिया में बहुत ही लाभदायक ढंग से किया जा सकता है। जो शिक्षण क्रिया इन विशेषताओं पर आधारित होगी वह बच्चों को स्वभाव से ही पसंद आएगी और उन्हें सीखने में सहायता देगी। प्रत्येक विशेषता शिक्षण के लिए अपना-अपना महत्त्व रखती है और उसे अध्यापक को समझ लेना चाहिए। आगे चलकर शिक्षण के सामान्य सुझावों में इसकी चर्चा की गई है।

शिक्षण के कुछ सामान्य सुझाव

पाठशाला सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाती है और सीखने के अवसर प्रदान करती है। बालक कब सीखता है? केवल किसी बात को बता देने से ही वह सीख नहीं सकता। वह अधिक से अधिक उसे रट कर दुहरा सकता है। इससे उसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आता। वास्तव मे बालक तब सीखता है जब वह सीखने की प्रक्रिया में स्वयं सक्रिय रूप से भाग लेता है। इसके लिए आप दो बातें हर समय ध्यान में रखें। एक तो यह कि बालक में सीखने की प्रक्रिया के प्रति रुचि हो और उसे इसमें अपने किसी अर्थ की सिद्धि होने की संभावना दिखाई दे। दूसरी यह कि आप अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण और परिस्थिति बनाएँ कि सीखने की क्रिया सुचारु रूप से संपन्न हो सके, बच्चे निर्धारित कुशलताओं, आदतों आदि को सीख सकें और दुहरा सके। इस प्रकार आप सहज ही अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे। अतः सीखने का उपयुक्त वातावरण तैयार करना और शिक्षण को बच्चों के लिए रोचक और अर्थपूर्ण बनाना ही आपका मुख्य कर्त्तव्य है। इस संबंध में आप निम्नलिखित सुझाव ध्यान में रखें:

१. बच्चे के अनुभव और क्रियाएँ ही उसके विकास के असली साधन है। जो जानकारियाँ उसे अपने चारों ओर देखकर और सुनकर सीधे अनुभव से प्राप्त होती है, वह उन्ही के आधार पर नए अनुभव और नई जानकारियाँ ग्रहण करता है। इसलिए नई चीज़ें बताते हुए आप बच्चो के पूर्व प्राप्त अनुभवों से अधिक-से-अधिक लाभ उठाएँ।

२. सामाजिक अध्ययन की पाठ्यवस्तु को अन्य विषयो की पाठ्यवस्तु से अलग नहीं समझना चाहिए। कक्षा के अन्य विषयों से उसका गहरा संपर्क रहता है। भाषा का संबंध तो स्पष्ट ही है। इसी की सहायता से बच्चा सोचता है, समझता है, बोलता है और लिखता है। आप शुरू से ही बच्चों में भाषा की योग्यता पैदा करें। उनके सामने शुद्ध भाषा बोलें और देखें कि वे भी शुद्ध भाषा का प्रयोग करते है। जहाँ कहीं गणित के प्रयोग का अवसर आए, वहाँ बच्चो को सोचने का समय दीजिए और अभ्यास कराइए। विज्ञान और सामाजिक अध्ययन का तो निकट का संबंध है। वातावरण का अध्ययन कराते समय आप कदम-कदम पर विज्ञान की सहायता लेंगे। कागज, मिट्टी का काम आदि तो सामाजिक अध्ययन की क्रियाओं के प्रधान उपकरण हैं। अतः आप हस्तकला, शिल्प आदि का उचित समन्वय सामाजिक अध्ययन से स्थापित करें।

३. प्रायः हर कक्षा में आप कहानियाँ पढ़ाएँगे। कहानी सुनाते समय अपनी भाषा को अधिक जानदार बनाइए। ज़रूरत पड़ने पर हाव-भाव से काम लीजिए। आपके बोलने के तरीके से ही बच्चे बहुत कुछ सीखेंगे। यदि कहानी में बातचीत आ जाए, तो बातचीत के शब्दों का प्रयोग कीजिए। उदाहरणार्थ यह न कहिए : लड़के ने अध्यापक से किताब माँगी। कहिए : लड़का अध्यापक के पास गया और बोला, 'गुरु जी, कृपा करके मुझे अपनी किताब दे दीजिए।' हाव-भाव समय के उपयुक्त हों।

४. आपकी कक्षा में कुछ तेज़ छात्र होंगे। इनकी आवश्यकताएँ औरों से भिन्न हैं। वे जल्दी सीख लेते हैं। औरों से अधिक सीखना चाहते है। उनकी उत्सुकता भी अधिक होती है। अतः उनकी आवश्यकताओं पर भी आप ध्यान रखें। उनको अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार आप मंद बुद्धि छात्रों की आवश्नकताओं का भी विशेष ध्यान रखें।

५. बच्चों के जीवन में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वे हर समय अपने शिक्षक के आचरण का अनुकरण करते है और उसके व्यक्तित्व से जाने अनजाने प्रेरणा लेते है। अतः आप अपने दिन प्रतिदिन के व्यवहार को आदर्श रूप से बच्चों के सामने रखें और देखें कि बच्चे भी शिष्ट व्यवहार करना सीखते हैं। इसके अतिरिक्त आप इस बात का भी ध्यान रखें कि बच्चों में कोई कुसंस्कार आदि न पड़ें, वे स्कूल के बाहर से छुआ-छूत आदि जैसी गलत बातें न सीखें।

६. हर एक कक्षा के पाठ्यक्रम में कुछ बुनियादी तथ्य और जानकारियाँ होती हैं। आगे चलकर इन्हीं के आधार पर ज्ञान का विस्तार किया जाता है। हर स्तर पर यदि इन तथ्यों को बच्चा अच्छी तरह

से नहीं समझ पाए या उनमें अभ्यस्त न हो, तो आगे उसको कठिनाई होगी। इसलिए यह जरूरी है कि इन तथ्यों को नए-नए रूप में दुहराया जाए।

७. पाठ्यपुस्तकों मे प्रचुर मात्रा में चित्र दिए गए है। ये सजावट मात्र नहीं है, बल्कि पाठ्य-पुस्तकों के अभिन्न अंग है। इनके माध्यम से रुचि और उत्सुकता, दोनों बढ़ती हैं। चित्रों को ध्यान से देखना सिखाइए। इनकी आपस में तुलना कराइए और बच्चों का नया ज्ञान प्राप्त करने में सहायता दीजिए। इनके द्वारा अस्पष्ट धारणाओं को स्पष्ट कीजिए।

८. पाठ्यपुस्तकों में दी गई क्रियाएँ और अभ्यास भी शिक्षण के आवश्यक अंग हैं। इनके द्वारा आप मूल्यांकन तो करेंगे ही, वरन् पढाते समय तथा पढ़ाने के बाद उनके प्रयोग से छात्रों के ज्ञान को व्यवस्थित रूप भी दे सकेंगे। साथ ही, क्रियाओं के माध्यम से पढ़ाकर आप ज्ञान को स्थायी और प्रभावपूर्ण बना सकते है। इन्हीं की मदद से आप नई क्रियाओं और नए अभ्यासों को सोच सकते है।

छात्रों के लिए संभव क्रियाएँ

सीखने में क्रियाओं का बड़ा महत्त्व है। इन से बच्चों में विषय के प्रति रुचि बढ़ती है और शिक्षा की बुनियाद भी पक्की होती है। सामाजिक अध्ययन पढ़ाते समय आप क्रियाओं की सहायता अवश्य लें। पाठ्यपुस्तक और दर्शिका में ऐसी अनेक क्रियाओं का उल्लेख किया गया है। क्रियाओं के संबंध में आपकी सुविधा के लिए यहाँ कुछ सामान्य सुझाव दिए जा रहे है। इन क्रियाओं को कराते समय आप नीचे लिखे सुझावों को ध्यान में रखें और आवश्यकतानुसार इनमें फेर बदल करलें :

१. पूरे साल के काम की योजना और व्यवस्था

साल के प्रारंभ में ही पूरे साल के काम की योजना बना लीजिए। पाठ्यक्रम के प्रत्येक 'यूनिट' पर कितने सप्ताह का समय लगेगा, अंदाज करके लिख लीजिए। पढ़ाते समय देखते जाइए उसमें कितना अंतर हुआ, क्यों ऐसा हुआ, इस पर भी विचार करते जाइए। संभव है कि आगामी वर्षों में भी आप इसी कक्षा को पढ़ाएँ। उस समय पुराने अनुभवों से लाभ उठाइएगा। योजना बना लेने के बाद ऐसा न सोचिए कि योजना में परिवर्तन न हो सकेगा। आवश्यकता पड़ने पर उसको बदलते जाइए, लेकिन परिवर्तन भी सोच समझकर कीजिए। इस परिवर्तन में आपको विशेष कठिनाई न होगी क्योंकि अधिकतर प्राथमिक पाठशालाओं में प्रायः एक ही अध्यापक को कक्षा के सारे विषय पढ़ाने होते हैं।

छोटे बच्चों को टोली में काम करना अच्छा लगता है। अतः आप अपनी कक्षा के बच्चों को कुछ टोलियों में बाँटकर क्रियाएँ कराएँ। प्रत्येक काम की व्यवस्थित योजना बच्चों के साथ मिलकर बनाएँ। कक्षा को अव्यवस्था से दूर रखें और प्रत्येक काम को सुव्यवस्थित ढंग से कराएँ। कई बार एक ही प्रकार का काम करते-करते बच्चे ऊब जाते हैं। वैसे दिन भर चुपचाप बैठकर काम करना उन्हें अच्छा नहीं

लगता है, वैसे ही पूरा समय घूम-फिर कर या खेलकर काटना भी उन्हें बुरा लगेगा। आप बच्चों की रुचि का अवश्य ध्यान रखें और विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ बदल-बदल कर बच्चों से कराएँ।

२. चीजें एकत्र करना, एलबम ग्रादि बनाना ग्रौर लेखा रखना

२. चीजें एकत्र करना, एलबम आदि बनाना और लेखा करना

बच्चों में चीज़ें एकत्र करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। आपको चाहिए कि इस दिशा में बच्चों को बराबर प्रोत्साहित करते रहें। बच्चों की हर प्रकार की चीज़ों में रुचि होती है। कागज़ के टुकड़े, दियासलाई के बक्स, टीन की डिब्बी से लेकर डाक टिकट, रेल टिकट, बस के टिकट, फूल, पौधे, पत्तियाँ, रंगीन पत्थर, चित्र आदि सभी चीज़ें एकत्र करते है। उनके द्वारा एकत्र की हुई चीजों को कभी-कभी प्रदर्शनी लगाइए और किसी भी चीज़ों को नीची निगाह से न देखिए। आप सभी चीजों के द्वारा बच्चों को कुछ-न-कुछ नवीन ज्ञान दे सकते है। उदाहरणार्थ एक बच्चा पुरानी चिट्ठियाँ एकत्र करता है। आप इनके द्वारा बच्चों को डाकघर की मोहर पढ़ना, इसका महत्त्व जानना, पता पढना व लिखना आदि बहुत-सी बातें सिखा सकते है। चिट्ठियों पर तरह-तरह के डाक-टिकट लगे होते हैं। प्रत्येक का कोई-कोई अर्थ होता है, उसके पीछे कुछ इतिहास होता है। इनसे आप नई-नई जानकारियाँ करा सकते है।

एकत्र की हुई चीजों को सुरक्षित और सुदर ढंग से रखने के लिए आप बच्चों को एलबम बनाना सिखाएँ। चित्र, टिकट, फूलपत्ती, पुराने सिक्के आदि की अलग-अलग एलबम बच्चे अपनी-अपनी रुचि के अनुसार बना सकते है। यहाँ यह याद दिलाना आवश्यक है कि बच्चों में चीजें एकत्र करने की प्रवृत्ति यदि बहुत अधिक बढ जाए, तो उनमें चोरी आदि की आदत पड़ने का डर रहता है। अतः आप इस ओर सतर्क रहें।

पत्र-पत्रिकाओं से लिए गए विभिन्न विषयों से संबंधित चित्र, मानचित्र, समाचार, सूचना, विज्ञापन आदि की कतरनों को एलबम में लगाना बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होगा। वे इन की मदद से सूर्योदय व सूर्यास्त का समय, दैनिक मौसम, वर्षा, बाढ़ सूखा, चुनाव, मेले, त्यौहार आदि अनेक बातों का लेखा रखना भी सीख सकेंगे।

३. सामाजिक अध्ययन का कोना, भीत-पत्र और प्रदर्शनी

प्राथमिक पाठशालाओं में हर विषय के लिए अलग कमरा मिलना कठिन होता है। आप अपनी कक्षा के कमरे के एक भाग का सामाजिक अध्ययन के लिए उपयोग कर सकते है। यही सामाजिक अध्ययन का कोना होगा। इस कोने में बच्चों द्वारा बने चित्र, मानचित्र, कविता, चार्ट, मॉडल, एलबम आदि रखे जा सकते है। इस स्थान की सफाई, देखभाल, सजावट आदि का भार आप बच्चों को ही सौंपें। सामाजिक अध्ययन का कोना एक प्रकार से 'कक्षा प्रदर्शिनी' का काम देगा। यहीं से आप कुछ ऐसी

सामग्री का चुनाव करें जिसे आप स्कूल के 'भीत-पत्र' में प्रदर्शनार्थ भेज सकते हैं। 'भीत-पत्र' में सभी कक्षाओं के बच्चों को और सभी विषयों से संबधित चीजें शामिल होती हैं और स्कूल में किसी एक विशेष स्थान पर लकड़ी के एक बडे बोर्ड पर लगाई जाती है। 'भीत-पत्र पर थोड़े-थोड़े समय के बाद नई-नई चीजे लगती रहनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप सामाजिक अध्ययन के कोने में बच्चों के लिखे अथवा संग्रह किए हुए लेख, कविताएँ, चुटकले, आदि स्कूल की पत्रिका में सम्मिलित करने के लिए भी चुन सकते है।

प्रत्येक स्कूल में कुछ विशेष समारोह प्रतिवर्ष मनाए जाते हैं। इन अवसरों पर आप बच्चों की बनाई हुई चीजों की प्रदर्शनी अवश्य लगाएँ। यह प्रदर्शनी स्कूल के किसी बड़े कमरे में लगाई जाए और इसमें सभी कक्षाओं के बच्चों की वस्तुएँ प्रदर्शित की जाएँ। प्रदर्शनी के लगाने में बच्चों को काम करने का अवसर अवश्य दीजिए। उनके माता-पिता आदि को भी यह प्रदर्शनी देखने के लिए बुलाएँ। बच्चों की बनाई हुई अच्छी चीजों पर कुछ छोटे-छोटे पुरस्कार भी दीजिए। पुरस्कार व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इससे बच्चों की भावनाओं को उचित प्रोत्साहन मिलेगा।

४. चित्र, मानचित्र, चार्ट, मॉडल आदि का प्रयोग

हाथ से काम करना बच्चे को स्वभाव से ही अच्छा लगता है। चित्र बनाना और एकत्र करना उनके लिए समान रूप से रुचिकर होता है। आप बच्चों से अपने विषय से संबंधित कुछ साधारण चित्र, चार्ट, मॉडल आदि बनवाएँ। धरती पर कोई बड़ा मानचित्र या मॉडल बनाने के लिए सारी कक्षा के बच्चे मिलकर काम करें। नए ढंग की बस्ती, आदर्श गाँव, स्कूल, भाखड़ा बाँध, कुतुब मीनार, सौरमंडल आदि के छोटे-बड़े मॉडल कागज, मिट्टी पत्थर आदि की सहायता से बनाए जा सकते है। ऐसे मॉडल बच्चो के लिए बहुत अर्थपूर्ण होते हैं। वे इन्हें छूकर, बनाकर, बिगाड़कर देख सकते है। इनकी सहायता से वे बहुत शीघ्र समझते है और उनका ज्ञान सुदृढ़ हो जाता है। छोटे मॉडलों को आप सामाजिक अध्ययन के कोने में रखवाएँ। धरती पर बनने वाले मॉडल अथवा मानचित्र के लिए आप स्कूल के प्रांगण में कोई ऐसा स्थान चुनें जहाँ पर बनाई हुई चीजें काफी देर तक सुरक्षित रह सकें। चित्र, चार्ट, मॉडल आदि बनाने के काम का आप हस्तकला के विषय से सरलतापूर्वक समन्वय स्थापित कर सकते है।

बच्चे कक्षा ५ में ग्लोब का अध्ययन करना और प्रयोग करना सीखेंगे। अत: आपके स्कूल में ग्लोब का होना जरूरी है। यदि आप के स्कूल में ग्लोब नहीं है तो आप बच्चों से नकली ग्लोब बनवाएँ। इसके लिए आप भिगोकर कूटाहुआ रद्दी कागज या मिट्टी काम में ला सकते हैं। भूमि की बनावट और इससे संबंधित अन्य बातें अप ग्लोब की सहायता से आसानी से समझा सकेंगे।

५. वार्तालाप, अभिनय और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

पढ़ाने की क्रियाओं में 'अभिनय' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अभिनय के माध्यम से बच्चों को सच्चे अनुभव प्राप्त होते है और अतीत की घटनाएँ उनके सामने जीवित हो उठती है।

सामाजिक अध्ययन पढ़ाते हुए आप वार्तालाप, क्रियागीत, कविता, कव्वाली, भजन, लोकनृत्य, लोकगीत, फेंसीड्रेस-शो, सामूहिक गान, एकांकी नाटक, मूक-अभिनय आदि बहुत से कार्यक्रम कराना पसंद करेंगे। छोटे बच्चे इन सभी चीज़ों में स्वभाव से रुचि लेते हैं। साधारण वार्तालाप भी उनके लिए एक प्रकार का अभिनय होता है। इतिहास की कहानी या वर्तमान की किसी घटना का नाटक खेलना तो उनके लिए बहुत ही अर्थपूर्ण होगा। अतः आप शिक्षण में अभिनय के माध्यम को भी काम में लाएँ और अधिकाधिक बच्चों को नाटक और अन्य सांस्कृतिक क्रियाओ में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। इन क्रियाओं को देखना और ध्यान से सुनना भी बहुत लाभकारी होता है। इसलिए आप इस दिशा में भी बच्चों को प्रशिक्षण दें।

पाठशाला में कुछ विशेष दिवस, उत्सव या सप्ताह आदि मनाना सामाजिक अध्ययन की अच्छी क्रिया है। अपनी कक्षा की विपय-वस्तु के अनुसार आप वर्ष में कई अवसरों पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे, स्कूल का वार्षिकोत्सव, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, बाल दिवस, अध्यापक दिवस, गांधी जयंती, संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस, मानव अधिकार दिवस, वनमहोत्सव सप्ताह, सफाई सप्ताह आदि। प्रत्येक अवसर पर बच्चों को उस अवसर से संबंधित ज्ञान प्राप्त करने में सहायता दें। बच्चे अपनी योग्यतानुसार कुछ लेख, कविता आदि भी तैयार करें।

६. प्रार्थना सभा और बाल सभा

सभी स्कूलों में हर रोज प्रार्थना सभा होती है। स्कूल के सभी बच्चे और अध्यापक इसमें अनिवार्य रूप से भाग लेते हैं। आप अपनी कक्षा के बच्चों को इस सभा में उचित और सुव्यवस्थित ढंग से भाग लेना सिखाएँ। वे प्रार्थना सभा में जाते और आते समय लाइन बनाकर चलें। सप्ताह में कम-से-कम एक दिन आपकी कक्षा के दो बच्चे प्रार्थना कहलवाएँ। इस सभा के लिए समय-समय पर उचित प्रार्थनाएँ चुनने का काम आप करें। प्रार्थना के बाद बच्चों की सफाई का निरीक्षण करना, राष्ट्रगीत सामूहिक रूप से गाना, कुछ विशेष अवसरों पर झंडा फहराना, भाषण देना, समाचार सुनाना, आदि सभी बातें सामाजिक अध्ययन से संबंध रखती हैं। आप इन्हें अच्छी तरह कराए।

बाल सभा के माध्यम से तो बच्चों को सामाजिक अध्ययन की बहुत-सी बातें सिखाई जा सकती हैं। सप्ताह में एक दिन आप कुछ समय कक्षा बाल सभा की बैठक के लिए निश्चित कर लीजिए। पूरे

स्कूल की बाल सभा की बैठक भी मास में एक बार अवश्य होनी चाहिए। आप अधिक-से-अधिक बच्चों को बाल सभा में बोलने के अवसर दें और स्कूल के छोटे-छोटे काम की ज़िम्मेदारी सौंपें। इस प्रकार उन्हें सभा में बोलने का अभ्यास होगा और ज़िम्मेदारी निभाने की आदत पड़ेगी। अपने विषय से संबंधित जो वार्तालाप, नाटक, कहानियाँ, क्रियागीत, कविताएँ आदि आप बच्चों से सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप से तैयार कराते हैं, उन्हें पहले 'कक्षा बाल सभा' में और फिर कुछ चुनी हुई चीजें पूरे स्कूल की बाल सभा में प्रस्तुत कराएँ। कभी-कभी किसी विशेष अवसर पर प्रतियोगिता कराएँ और बच्चों को कुछ पुरस्कार भी दें। यह बात याद रखिए कि आपका काम बच्चों को ज़रूरी सुझाव और निर्देश देकर उनका उचित मार्गदर्शन करना है। बाल सभा बच्चों की सभा है। इसका सारा कार्य मुख्य रूप से बच्चे ही करेंगे। आप अपने छात्रों को धीरे-धीरे इस योग्य बनाइए कि वे अपनी बाल सभा का आयोजन स्वतंत्र रूप से करना सीखें। अध्यक्ष, मंत्री आदि का चुनाव भी बच्चे आपके निरीक्षण में स्वयं ही करें। अध्यक्ष सभा की कार्य-वाही चलाए, मंत्री इसका ब्यौरा रखे। बाल सभा के अधिकारी प्रत्येक कक्षा से चुने जाएँ। बड़ी जिम्मे-दारी के काम ऊँची कक्षाओं के बच्चे करें और वे इन कामों का प्रशिक्षण धीरे-धीरे छोटे बच्चों को देते रहें।

७. पास-पड़ौस का अध्ययन और स्थानीय भ्रमण

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में पास-पड़ौस के अध्ययन का बड़ा महत्त्व होता है। इसके लिए बच्चों को पाठशाला से बाहर भ्रमण पर ले जाना आवश्यक होगा। भ्रमण से यहाँ हमारा अभिप्राय केवल मनोरंजन नहीं है। बल्कि बच्चों को कुछ अनुभव और जानकारियाँ कराना हमारा ध्येय है।

इस संबंध में आप अपने छात्रों को बहुत-से ऐतिहासिक, भौगोलिक स्थान, जंगल, नदी, झील, पार्क, शहर, गाँव, स्टेशन, हवाई अड्डे, दफ्तर, कारखाने, प्रदर्शनी, मेले, संग्रहालय, चिड़ियाघर, पंचायत, निगम और संसद की बैठक आदि अनेक चीज़ें दिखाना चाहेंगे, अनेक लोगों से बातचीत कराना चाहेंगे। अतः आप पास-पड़ौस के अध्ययन अथवा स्थानीय भ्रमण पर जाने से पहले विशेष तैयारी करें और बच्चों से मिलकर इसकी योजना बनाएँ। इस संबंध में आप निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखें :

—भ्रमण के उद्देश्य आपके मन में स्पष्ट होने चाहिए।

—भ्रमण से पूर्व छात्रों से उसके संबंध में बातचीत कीजिए।

—कापी, पैंसिल, भोजन आदि लाने और अन्य आवश्यक बातों के बारे में उन्हें पहले से समझा दीजिए।

—सभी बच्चों को योजना में सक्रिय भागीदार बनाने का यत्न कीजिए। कहाँ-कहाँ किस प्रकार किस समय जाएँगे? कौन क्या करेगा? किससे क्या बातचीत की जाएगी? किन-किन बातों का लेखा रखा जाएगा? आदि सभी पहलुओं पर पहले ही विचार कर लीजिए।

—जिस स्थान पर आप जा रहे है, उसका निरीक्षण पहले आप स्वयं कर लीजिए और उसके खुलने, बंद होने के बारे में आवश्यक जानकारी भी पहले से प्राप्त कर लीजिए। किसी सस्था, सभा आदि में जाना हो या किसी व्यक्ति से मिलना हो, तो दिन और समय भी निश्चित कर लीजिए।

—निकट के स्थानों की यात्रा पैदल कराइए। दूर जाना हो तो बस आदि का प्रबंध कर लें।

—भ्रमण पर जाने से पहले बच्चों को टोलियों में बाँट दीजिए और प्रत्येक टोली का एक नेता भी नियुक्त कर दीजिए। सभी टोलियों को अलग-अलग काम सौप दीजिए। यात्रा के बीच में नेता अपनी-अपनी टोली के बच्चों को आवश्यक निर्देश देगे।

—यात्रा में बच्चों की सुरक्षा करना आपकी बड़ी जिम्मेदारी है। यदि आप बहुत अधिक बच्चों को यात्रा पर ले जा रहे है तो स्कूल के कुछ अन्य अध्यापकों को भी साथ ले जाएँ। यह संभव न हो तो आप कुछ बच्चों के बड़े भाई, बहिन, माता आदि को अपनी सहायता के लिए अपने साथ ले जाएँ।

—भ्रमण के बीच मे बच्चों के व्यवहार पर दृष्टि रखिए। वे हर काम सुव्यवस्थित ढंग से करें, सभी से शिष्टतापूर्वक बातचीत करें। सड़क के नियमों का पालन करें, किसी सार्वजनिक अथवा निजी संपत्ति को हानि न पहुँचाएँ, मिलजुलकर और बाँटकर खाएँ-पीएँ।

—यात्रा से वापस आने के बाद भी कुछ काम करना बहुत ज़रूरी है, अन्यथा आपकी यात्रा अधूरी रहेगी। अतः आप कक्षा में यात्रा के ऊपर खूब बातचीत करें। बच्चों के अनुभवों और जानकारियों का सारांश श्यामपट पर लिखते जाएँ। पूरी कक्षा इस यात्रा का विवरण लिखे, चित्र बनाए, मॉडल तैयार करे, सूचियाँ आदि बनाए और अन्य संबंधित क्रियाएँ करे।

—यदि आप किसी व्यक्ति विशेष को बातचीत के लिए कक्षा में बुलाएँ, तो उससे दिन और समय आदि पहले से ही निश्चित कर लीजिए। बातचीत के विषय और आगंतुक के बारे में बच्चों को ज़रूरी जानकारी कराना न भूलिए। वे अपने प्रश्न बारी-बारी से पूछे। आगंतुक का स्वागत धन्यवाद आदि भी बच्चे ही करें।

८. रेडियो, टेलीविजन कार्यक्रम और फिल्म-शो का आयोजन

रेडियो, टेलीविजन और फिल्म शिक्षा के बहुत शक्तिशाली साधनों में से हैं। अनेक बच्चे अपने घर या पड़ौस में रेडियो कार्यक्रम सुनते हैं। कुछ बड़े नगरों के स्कूलों में भी रेडियो अथवा टेलीविजन सैट हैं। सामाजिक अध्ययन से संबंधित अनेक कार्यक्रम रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारित होते हैं। जब भी

अवसर मिले, आप इनका लाभ उठाइए। स्वतन्त्रता दिवस, बाल दिवस, गणतंत्र दिवस आदि के अवसर पर तो आप बच्चों से विशेष रूप से रेडियो कार्यक्रम सुनने का अनुरोध कीजिए।

किसी विशेष विषय से संबंधित फिल्म देखना बच्चों के लिए बड़ा लाभकर होगा। इसके लिए आप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभाग (इंद्रप्रस्थ इस्टेट नई दिल्ली) के विभागाध्यक्ष से संपर्क स्थापित करे। वे कुछ समय के लिए आपके स्कूल से संबंधित फिल्म भेजने का प्रबंध करेंगे। विदेशों से संबंधित फिल्मों के लिए आप दूतावासों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

रेडियो, टेलीविजन कार्यक्रम सुनने अथवा फिल्म-शो देखने से पहले आप बच्चों को विषय से संबंधित कुछ आवश्यक बातें समझा दें। कार्यक्रम देखने के बाद आप बच्चों से इसके बारे में बातचीत अवश्य करें और प्रश्नों द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करें।

६. कहानी सुनाना

कहानी सुनाना एक कला है। हर शिक्षक को यह कला आनी चाहिए। प्राथमिक शिक्षाओं के बच्चे कहानी सुनना और सुनाना पसंद करते है। अतः छोटे बच्चों के शिक्षकों के लिए कहानी सुनाने का प्रभावपूर्ण ढंग सीखना अनिवार्य है। इतिहास की कहानियों के अलावा प्रस्तुत पाठ्यपुस्तकों में कुछ अन्य पाठों को भी या तो कहानी में गूँथा गया है या पाठ्यवस्तु को कहीं-कहीं पर कहानी का रंग दिया गया है। इसका एकमात्र उद्देश्य यही है कि बच्चे कठिन विषय को कहानी के माध्यम से जल्दी समझ जाएँ और रुचि से पढ़े।

कहानी सुनाने की कई विधियाँ हो सकती है। प्रश्नोत्तर द्वारा अथवा टुकड़ों में कहानी सुनाई जा सकती है। चित्रों के माध्यम से भी कहानी सुनाई जाती है। अच्छी कहानी सुनाने वाला सदा जानदार सरल भाषा में कहानी सुनाता है। वह आवश्यकतानुसार आवाज बदलकर, रुक-रुककर, हाव-भाव के साथ घटनाओं का वर्णन करता है। इससे सुनने वालों की रुचि बनी रहती है और वे उकताते नहीं। आप बच्चों को भी कक्षा में कहानी सुनाने के लिए उत्साहित करें। वे आपकी नकल करके ही कहानी सुनाना सीखेंगे। आप उन्हें उपयुक्त हाव-भाव के साथ—हँसकर, रोकर, गाकर, नाचकर—कहानी सुनाना सिखाएँ।

लंबी कहानियों को एक ही बार में न पढ़ाकर कई दिनों तक टुकड़ों में पढ़ाएँ। कहानी पढ़ाते समय कोई उपदेश बच्चों को न दें। बच्चे निष्पक्ष भाव से कहानी पढ़ें और स्वयं इसके अच्छे-बुरे पहलुओं को समझें। कहानियों का अन्य पाठों या विषयों से समन्वय करना उचित होगा। कुछ कहानियों का अथवा इन पर आधारित कुछ घटनाओं का वार्तालाप या अभिनय भी बच्चे तैयार कर सकते हैं।

मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए हम छात्रों के शिक्षण में नई-नई विधियाँ, क्रियाएँ, उपकरण आदि काम में लाते है। किसी विषय के शिक्षण में बच्चों ने क्या सीखा, उनकी क्या उपलब्धियाँ हुई, उनके आचरण में क्या परिवर्तन आए और शिक्षक अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में कहाँ तक सफल हुआ, इन सब बातों की जाँच करने का नाम मूल्यांकन है। मूल्यांकन का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम अपने शिक्षण की सफलता या असफलता का पता लगाले अथवा छात्रों की उपलब्धियों की जाँच के आधार पर उन्हें सफल या असफल कर दें। इसके विपरीत मूल्यांकन के परिणामों को शिक्षण में सुधार लाने का साधन बनाकर प्रयुक्त करना ही हमारा उद्देश्य है। वास्तव में मूल्यांकन शिक्षण का एक अभिन्न अंग है। यह एक ऐसी क्रिया है, जो शिक्षण के साथ-साथ चलती है। अपने दिन-प्रतिदिन शिक्षण-कार्य के बीच आप अनुभव करेंगे कि विभिन्न स्थितियों के अनुसार कई शिक्षण-क्रियाओं को मूल्यांकन के लिए और कई मूल्यांकन क्रियाओं को शिक्षण के लिए प्रयोग किया जा सकता है। कभी-कभी एक ही क्रिया शिक्षण और मूल्यांकन, दोनों के उद्देश्य पूर्ण करने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए सड़क पर चलने के नियम सिखाने के लिए आप बच्चों को चौराहे का खेल खिलाते हैं। इस क्रिया के द्वारा आप बच्चों को न केवल सड़क के नियम सिखाते हैं और इनका अभ्यास कराते हैं, वल्कि इसी के द्वारा आप उनके सीखे हुए नियमों की जाँच भी कर सकते है।

आप हर रोज अपनी कक्षा में प्रश्न पूछते हैं, मासिक जाँच करते है, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा लेते हैं। मूल्यांकन का यह ढंग सरल और स्पष्ट है। इसके द्वारा आप बच्चों के सीखे हुए कौशल और याद किए हुए तथ्यों और जानकारियों की जाँच कर लेते हैं, लेकिन इतना ही काफी नहीं है। सीखे हुए ज्ञान के आधार पर बच्चों के आचरण में आने वाले परिवर्तनों की जाँच करना भी जरूरी है। यह मौखिक या लिखित परीक्षा द्वारा संभव नहीं है। इसके लिए आप बच्चों के व्यवहार का निरंतर निरीक्षण कीजिए और उचित परिस्थितियाँ बनाकर तथा ठीक प्रशिक्षण देकर उनकी भावनाओं और वृत्तियों मे सुधार लाने का यत्न कीजिए।

प्रत्येक छात्र के विषय में और उसकी प्रगति के सबंध में जानकारी के लिए आप अपने से निम्न प्रकार के प्रश्न पूछें :

—क्या वह आत्मनिर्भर है या प्रत्येक बात में दूसरों पर निर्भर रहता है ?

—क्या वह दूसरों के साथ तत्काल ही दोस्ती कर लेता है या एकांत में रहना पसंद करता है ?

—क्या वह दूसरों के साथ मिल-जुलकर काम कर सकता है या थोड़ी ही देर में लड़ने लगता है ?

—क्या वह अपनी बारी की प्रतीक्षा खुशी से करता है या लड़-झगड कर हमेशा सबसे पहले बारी लेना चाहता है ?
—क्या वह नियमों का पालन करता है ? यदि करता है, तो क्या केवल आपके सामने करता है या हमेशा ही ?
—क्या वह अपनी जिम्मेदारियों को निभाता है ? और यदि निभाता है, तो कैसे ? क्या उस समय प्रसन्न रहता है या उस काम को मुसीबत समझकर करता है ?
—क्या वह अपनी और दूसरों की चीज़ों का ध्यान रखता है ?
—क्या वह किसी काम या खेल मे अगुआ बनता है ? यदि बनता है, तो औरों के साथ उसका कैसा बर्ताव रहता है ? उसके साथी प्रसन्नतापूर्वक उसका कहना मानते हैं या उसकी धौंस से डरते है ?
—वह स्वभाव से ही भीरु तो नहीं ? क्या सबके सामने बोलने में उसे कोई झिझक होती है ? क्या ऐसी झिझक हमेशा होती है या किन्हीं विशेष अवसरों पर ? यदि विशेष अवसरों पर होती है, तो क्यों ?
—बड़ों के सामने उसका कैसा आचरण रहता है ? क्या वह उपयुक्त शिष्ट शब्दों का प्रयोग करता है या नहीं ? अपने से छोटों से उसका बर्ताव कैसा है ?
—क्या काम करते समय वह अधीर हो जाता है या शांत रहता है ? उसने धैर्य रखना सीखा है या नहीं ?
—क्या वह प्रत्येक साथी से बराबरी का व्यवहार करता है या नहीं ? क्या वह अपने साथियों के माता-पिता के व्यवसायों का सम्मान करता है या नहीं ?

पाठ्यपुस्तकों के बारे में

पहले कहा जा चुका है कि प्राथमिक कक्षाओं के सामाजिक अध्ययन के हमारे वर्तमान पाठ्यक्रम का मौलिक आधार है "हमारा देश और उसकी एकता"। कक्षा १ और कक्षा २ में इस विषय को पढ़ाने के लिए कोई पाठ्यपुस्तक नहीं है। इसके स्थान पर शिक्षकों के लिए एक सामाजिक अध्ययन दर्शिका है, जिसकी सहायता से अध्यापक इन कक्षाओं के बच्चों को घर, पाठशाला और पास-पौड़स के बारे में पढ़ाएँगे। कक्षा ३ के आरंभ में बच्चों को उनके राज्य (जिसमें वे रहते हैं) के विषय में विस्तार से अध्ययन कराया जाएगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अध्यापक अपने-अपने राज्य से संबंधित किसी अच्छी पाठ्य-पुस्तक की सहायता ले सकते हैं। इसके उपरांत कक्षा तीन के बच्चे "हमारा देश भारत—भाग १" पाठ्य-पुस्तक का अध्ययन करेंगे। यदि कक्षा तीन में यह पुस्तक पूरी समाप्त न हो पाए तो शेष भाग चौथी

कक्षा के आरंभ में पढ़ाएँ। कक्षा चार के लिए मुख्य पाठ्यपुस्तक "हमारा देश भारत—भाग २" है। कक्षा ५ की सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का मुख्य विषय है—भारत और संसार।

हमारा देश भारत—भाग २

"हमारा देश भारत—भाग २" नामक पुस्तक का अध्ययन बच्चे कक्षा ४ मे करेंगे। इस पुस्तक में छात्र अपने देश भारत के विषय में विभिन्न बातें विस्तार से पढ़ेंगे।

"हमारा देश भारत—भाग १" की भाँति इस पुस्तक को भी बच्चों के लिए सरल, सुदर और रोचक बनाने का प्रयत्न किया गया है। उदाहरण के लिए किसी पाठ को रोचक कहानी अथवा वार्तालाप के रूप में गूँथा गया है तो किसी पाठ में बच्चों को सैर-सपाटे पर ले जाने का नाटकीय ढंग अपनाया गया है। कठिन शब्दों और धारणाओं की व्याख्या साथ-साथ कर दी गई है। भौगोलिक तथ्यों और परिभाषाओं का स्पष्टीकरण करने के लिए 'सीख लो' का पाठ इस पुस्तक के शुरू में भी रखा गया है। आवश्यकता पड़ने पर बच्चे इस पाठ की पुनरावृत्ति कर सकते है और सहायता ले सकते हैं। शेष सारी पुस्तक को पाँच खडों में बाँटा गया है। एक जैसी विषयवस्तु के पाठ एक ही खंड के अंतर्गत दिए गए हैं।

खंड १ में भारत की स्थिति, सीमा, भूमि की प्राकृतिक बनावट, जलवायु, वनस्पति, उपज, आदि का विस्तारपूर्वक ब्यौरा दिया गया है।

खड २ में देश की विकास-योजनाओं की चर्चा की गई है। देश की अपार प्राकृतिक संपत्ति के उचित और अधिकतम उपयोग का महत्त्व बार-बार दोहराया गया है। कृषि के ढंगों में सुधार लाने, बिजली और सिंचाई योजनाओ के विकास करने, कृषि और उद्योगों का उत्पादन बढ़ाने, देश के करोड़ों ग्रामवासियों तथा अन्य लोगों का जीवनस्तर ऊँचा उठाने के प्रश्नों पर विचार किया गया है।

खंड ३ में यातायात और संचार के आधुनिक तथा उन्नत साधनों के महत्त्व का विवरण दिया गया है। देश के जल, स्थल और हवाई मार्गों तथा संचार के साधनों के विषय में दिए गए पाठों द्वारा इस बात पर बल दिया गया है कि यातायात और संचार के विभिन्न साधन न केवल देश की उन्नति में सहायता देते है, बल्कि देशवासियों के बीच मे मेलजोल और एकता की भावना पैदा करते हैं।

खंड ४ में भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई, गणतंत्र राज्य की स्थापना, हमारा संविधान, हमारी वर्तमान संघीय सरकार का स्वरूप, हमारे अधिकार और कर्त्तव्य, हमारे राष्ट्रीय त्यौहारों और हमारे राष्ट्र के प्रतीकों का विवरण दिया गया है। साथ ही साथ इस बात पर बल दिया गया है कि देश के विभिन्न भागों में रहने वालों के जीवन में भिन्नताएँ अवश्य हैं, लेकिन सभी भारतवासी हैं, सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं और सभी लोग देश को उन्नत बनाने और देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्रयत्नशील रहते है।

अंतिम खंड में भारत के इतिहास की कुछ कहानियाँ दी गई है। इन रोचक कहानियों को पढ़ने

से बच्चों को अपने देश के पुराने समय के लोगों के जीवन और रहन-सहन के बारे में जानकारी मिलेगी।

प्रत्येक पाठ के अंत में दिए गए "अब बताओ" और "कुछ करने को" शीर्षकों के अंतर्गत कुछ प्रश्न और क्रियाएँ दी गई हैं। आपको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इनका उद्देश्य केवल छात्रों का मूल्यांकन करने तक सीमित नहीं है। इन सभी प्रश्नों और क्रियाओं का सीधा संबंध पाठ्य सामग्री से है। पढ़ाते समय आप अनुभव करेंगे कि पाठों के अंत में दिए गए ये अभ्यास न केवल आपको निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में सहायक होंगे बल्कि छात्रों के अध्ययन क्षेत्र को और अधिक विस्तृत करेंगे। अतः आप इन प्रश्नों और क्रियाओं को पाठ का महत्त्वपूर्ण भाग मान कर चलें और कक्षा में इन पर यथा-संभव बल दें।

पुस्तक के अंत में बच्चों के जानने योग्य कुछ रोचक जानकारी दी गई है। पुस्तक पढ़ाते समय आप इसका लाभ उठाएँ और बच्चों को ऐसी जानकारी उपयोग करने और एकत्र करने के लिए प्रोत्सा-हन दें।

कक्षा में पुस्तक का प्रथम परिचय

कक्षा ४ में बच्चे "हमारा देश भारत—भाग २" नामक पुस्तक भारत के सभी राज्यों के लोगों के जीवन का अध्ययन समाप्त करने के बाद पढ़ेंगे। वे इस पुस्तक की विषयवस्तु जानने के लिए आतुर होंगे। अतः उनकी उत्सुकता का लाभ उठाते हुए और विधिवत शिक्षण आरभ करने से पहले नई पाठ्यपुस्तक का परिचय बच्चों को उनके पूर्वज्ञान के आधार पर अवश्य दें। इस बात का ध्यान रखें कि पुस्तक परिचय के समय कक्षा के अधिक-से-अधिक बच्चों के पास पुस्तकें हों। आप बच्चों से पुस्तक में विषय-सूची, चित्र, मानचित्र आदि देखने को कहें। बाद में आप नीचे लिखी बातों पर चर्चा करके पुस्तक का सामान्य परिचय दें :

—पुस्तक का नाम और मुखपृष्ठ
—पुस्तक के कुछ मुख्य चित्र, मानचित्र
—विषय-सूची

दर्शिका के बारे में

शिक्षण कार्य को सफल बनाने और सुचारु रूप से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने विषय और उसके उद्देश्यों से भली भाँति परिचित हो। अपने छात्रों की मानसिक व शारीरिक बनावट और विकास, उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि, उनकी मुख्य विशेषताओं और रुचियों आदि का ज्ञान भी उसे होना चाहिए। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के अनेक साधनों, शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों और

मूल्यांकन के नए-नए तरीकों को जाने और सीखे बिना तो किसी भी शिक्षक का काम नहीं चल सकता। इन सभी बातों का विस्तृत विवरण पिछले पृष्ठों में दिया जा चुका है।

यह दर्शिका विशेष रूप से केवल शिक्षकों के लिए ही लिखी गई है। इसमें पुस्तकों के शिक्षण से संबंधित उपरोक्त सभी बातों पर विस्तार से विचार किया गया है। आशा है कि इस दर्शिका से शिक्षकों का उचित मार्ग-दर्शन होगा और उनको अपने दिन-प्रतिदिन के शिक्षण-कार्य में अवश्य ही सहायता मिलेगी। दर्शिका में पाठ्यपुस्तक के विभिन्न खंडों और पाठों को निम्नलिखित मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत विभक्त करके आवश्यक सुझाव दिए गए हैं :

(क) खंड के लिए

१. **पृष्ठभूमि और उद्देश्य** : इस शीर्षक के अंतर्गत प्रत्येक खंड के सभी पाठों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। साथ ही साथ पिछली कक्षा या पिछले खंडों पर आधारित बच्चों के पूर्व-ज्ञान की पृष्ठभूमि की ओर संकेत किया गया है। यह भी बताया गया है कि पूरे खंड को पढ़कर बच्चों को क्या जान लेना चाहिए, उन्हे क्या कुशलताएँ सीख लेनी चाहिएँ और उनमें क्या-क्या आदतों और भावों की नींव पड़ जानी चाहिए। यहाँ यह कहना बहुत आवश्यक है कि ये सभी उद्देश्य (धारणाएँ, कुशलताएँ और भाव) बच्चों को रटाने के लिए नहीं हैं। दर्शिका में दिए गए इस प्रकार के सभी उद्देश्य केवल आपके शिक्षण-कार्य में सहायता देने के लिए हैं।

२. **पढ़ाने के लिए सामान्य सुझाव** : इस शीर्षक के अधीन प्रत्येक खंड को आरंभ करने के लिए कुछ संभव सुझाव दिए गए है। यह सुझाव केवल सुझाव मात्र हैं। अपनी आवश्यकताओं और साधनों के अनुसार आप इनमें अवश्य ही फेर-बदल करेंगे। इन सुझावों में अधिकतर ऐसी क्रियाएँ बताई गई हैं जो पूरे खंड को पढ़ाते हुए चालू रहेगी। आप स्वयं भी कुछ ऐसी अन्य क्रियाएँ सोचें।

(ख) पाठ के लिए

१. **पृष्ठभूमि और उद्देश्य** : इस शीर्षक के अंतर्गत प्रत्येक पाठ से संबंधित बच्चों की पृष्ठ-भूमि की ओर संकेत किया गया है और पाठ के कुछ मुख्य उद्देश्य गिनाए गए हैं। आप याद रखें कि यह उद्देश्य **केवल आपके लिए हैं**, बच्चों के लिए नहीं। उदाहरण के लिए एक पाठ में दिया गया यह उद्देश्य **"भारत के विभिन्न राज्य अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं"** बच्चों के याद करने के लिए नहीं है। इसके विपरीत आप देखें कि पाठ पढ़ाने के पश्चात यह उद्देश्य पूरा हुआ या नहीं। अर्थात बच्चों को आवश्यक जानकारी हुई या नहीं।

२. **पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव** : यहाँ पर पूरे पाठ को पढ़ाने के लिए विस्तृत रूप

से सुझाव नही दिए गए हैं। केवल उन बातों पर अधिक बल दिया है जो बहुत आवश्यक हैं या बहुत लाभ-कर हो सकती है। कोई भी सुझाव अनिवार्य नहीं है। सभी सांकेतिक है। आप इनमें आवश्यकतानुसार फेर-बदल कर सकते है अथवा इनमें से चुन सकते हैं। इन सुझावों में कहीं-कहीं क्रियाएँ भी बताई गई हैं। इनसे अवश्य लाभ उठाएँ। इस बात का ध्यान रखें कि आपकी कक्षा के अधिक से अधिक बच्चे क्रियाओं में भाग लें। आपके शिक्षण की सफलता इसी पर निर्भर होगी।

पाठ्यपुस्तक में बहुत से चित्र, मानचित्र आदि है। पढ़ाने के सुझावों में इनका प्रयोग करना भी बताया गया है।

३. **अन्य संभव क्रियाएँ** : इस शीर्षक के अंतर्गत हर पाठ में कुछ रोचक क्रियाएँ बताई गई है जिन्हें बच्चे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से कर सकते है। इनमें से कुछ क्रियाएँ प्रखर बुद्धि छात्रों के लिए उपयुक्त होंगी और कुछ मंद-बुद्धि छात्रों के लिए। कुछ क्रियाएँ कक्षा के बच्चे दल बनाकर करेंगे और कुछ को पूरी कक्षा मिलकर करेगी। पाठ्यपुस्तक मे भी 'कुछ करने को', के अंतर्गत ऐसी ही क्रियाएँ लिखी गई हैं। आप इन सभी मे से कुछ क्रियाएँ करा सकते है, शेष को छोड़ सकते हैं।

४. **मूल्यांकन** : इस संबंध में गत पृष्ठों में अलग से विचार किया जा चुका है। इस शीर्षक के अंतर्गत कुछ ऐसी क्रियाएँ, सुझाव और सहायक प्रश्न दिए गए हैं जिनकी सहायता से आप बच्चों की जाँच कर सकेंगे और उनके बनते, बदलते, सुधरते भावों, आदतों, कुशलताओं और जानकारियों को परख सकेंगे। उन पर निगाह रखकर उचित परिवर्तन ला सकेंगे। यह सदैव याद रखिए कि मूल्यांकन शिक्षा का अभिन्न अंग है। यह एक निरंतर चलने वाली क्रिया है। आपका काम बच्चों का मूल्यांकन करके उन्हें फेल या पास करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वास्तविक उद्देश्य तो यह है कि आप मूल्यांकन को शिक्षण में सुधार लाने का साधन बनाकर प्रयोग करें।

शिक्षण के विस्तृत सुझाव

सीख लो

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पुस्तक में कुछ भौगोलिक पारिभाषिक शब्दों और मानचित्रों का प्रयोग किया गया है। मानचित्रों को पढ़ना और समझना एक कला है । इस कला को बिना सीखे और इन शब्दों का अर्थ समझे बिना पाठों का अध्ययन बच्चों के लिए अर्थपूर्ण नहीं होगा। अतः मानचित्रों को पढ़ने और समझने की कला को सीखना और भौगोलिक पारिभाषिक शब्दों के अर्थ समझना बच्चों के लिए आवश्यक है। इसीलिए 'सीख लो' के अंतर्गत भौगोलिक तथ्यों का अर्थ स्पष्ट किया है और मानचित्र अध्ययन के लिए कुछ संकेत दिए गए हैं। 'सीख लो' के अध्ययन से बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. मानचित्र अध्ययन से संबंधित ज्ञान और कुशलताएँ प्राप्त करेंगे जैसे मानचित्र में दिशाओं का ज्ञान, विभिन्न प्रकार की सीमा रेखाओं की पहचान और मानचित्र में दो स्थानों के बीच की सीधी दूरी नापना।

२. निम्नलिखित भौगोलिक पारिभाषिक शब्दों के अर्थ समझ जाएँगे :
समुद्र, समुद्रतट, बंदरगाह, खाड़ी, प्रायद्वीप, अंतरीप, द्वीप, समुद्रतल से ऊँचाई, मैदान, पठार पहाड़, पहाड़ियाँ, पर्वत चोटी, पर्वत माला, घाटी, दर्रा, हिम नदी, सहायक नदी, झील, झरना और जलवायु

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

सीख लो के अंतर्गत दी गई विषयवस्तु एक स्वतंत्र पाठ न बनाकर पुस्तक के अन्य पाठों को पढ़ाने में सहायक है।

पाठों के अध्ययन को रुचिपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाने के लिए आप 'सीख लो' पाठों से पहले पढ़ाएँ। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि पुस्तक पढ़ाते समय इसका प्रयोग नहीं किया जाए। पुस्तक में जब भी इन शब्दों का उल्लेख आए तो आप बच्चों का ध्यान एक बार फिर 'सीख लो' में दिए गए चित्रों और

परिभाषाओं की ओर आकर्षित करें। 'सीख लो' पढ़ाते समय आप इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि बच्चे परिभाषा केवल रट न लें।

सभी भौगोलिक पारिभाषिक शब्द चित्रों की सहायता से स्पष्ट किए गए हैं और उनका संबंध भारत की प्राकृतिक स्थिति से भी बताया गया है। अतः आप पढ़ाते समय इन भौगोलिक पारिभाषिक शब्दों को भारत देश की प्राकृतिक जानकारी मे गूँथ दें।

यह पुस्तक पढने से पहले बच्चे अपने राज्य के विषय में पढ़ चुके होंगे। अतः पुस्तक आरंभ करते समय सर्वप्रथम भारत के मानचित्र से कक्षा का परिचय कराना उपयुक्त होगा।

आप बच्चो का ध्यान पुस्तक मे दिए भारत के मानचित्र की ओर आकर्षित करें और निम्न प्रकार के प्रश्नों पर बातचीत करके अंतर्राष्ट्रीय सीमा, राज्य सीमा, और समुद्रतट रेखा की जानकारी कराएँ।

—भारत के उत्तर-पश्चिम में कौन-सा देश है ?

—हमारे देश और पाकिस्तान के बीच की सीमा मानचित्र में किस प्रकार दिखाई गई हैं ?

—हमारे देश के दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में क्या है ?

—यह किस रंग से दिखाया गया है ?

—तट रेखा मानचित्र में किस प्रकार दिखाई गई है ?

—अंतर्राष्ट्रीय और राज्य सीमा में क्या अंतर है ?

बच्चे फुटरूल की सहायता से सीधी रेखाएँ खींचना और नापना जानते हैं। उनकी इस जानकारी के आधार पर आप पुस्तक में दिए गए चित्र नं० १ और २ द्वारा मानचित्र में विभिन्न स्थानों की सीधी दूरी नापना सिखाएँ और बच्चों से कहें कि वे दिल्ली से बंबई, कलकत्ता आदि की सीधी दूरी नापें।

पुस्तक में दिए चित्र नं० ६ की सहायता से बातचीत करें और उन्हें समुद्रतल से ऊँचाई, मैदान, पठार तथा पर्वत की जानकारी कराएँ।

पुस्तक में दिए चित्र नं० ५ पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें और बातचीत द्वारा प्रायद्वीप, द्वीप, खाड़ी, अंतरीप, आदि स्पष्ट करें और बच्चों से कहें कि वे इन्हें भारत के मानचित्र में पहचानें। इसी चित्र की सहायता से आप बच्चों को नदी, सहायक नदी, और संगम की जानकारी कराएँ।

यदि संभव हो तो आप बच्चों से भूमि पर मिट्टी से एक ऐसा मॉडल वनवाएँ जिसमें प्रायद्वीप, द्वीप, खाड़ी, अंतरीप, नदी, सहायक नदी, संगम आदि स्पष्ट किए जा सकें।

खंड १

भारतभूमि

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे अपने राज्य और दूसरे राज्यों के विषय मे अच्छी जानकारी प्राप्त कर चुके है। वे यह भी जानते हैं कि सभी छोटे-बड़े राज्य भारत के अंग हैं। इस कक्षा मे वे हमारे विशाल देश, भारत की साधारण जानकारी विधिवत प्राप्त करेंगे। इस प्रथम खंड से क्रमबद्ध जानकारी को शुरूआत होती है। इस खंड में बच्चे भारत की स्थिति और अपने पडोसी देशों की जानकारी प्राप्त करेंगे। इस खंड के पाठों में वे देश के विभिन्न भागों की प्राकृतिक बनावट, जलवायु, वर्षा आदि का अध्ययन करेंगे। वे यह भी जान लेंगे कि इन सबका देश के विभिन्न भागों में रहनेवालों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस खंड के अध्ययन से

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमारा देश भारत एक विशाल देश है।
२. देश के विभिन्न भागों में भूमि की बनावट, जलवायु और उपज अलग-अलग है।
३. देश के विभिन्न भागों में रहने वालों के जीवन पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. भारत के मानचित्र को पहचानना।
२. मानचित्र में भारत के पड़ोसी देशों को पहचानना।
३. भारत के मानचित्र में विभिन्न प्राकृतिक भागों के विस्तार को पहचानना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. प्राकृतिक सुंदरता के प्रति प्रेम।

२. देश की विविधता के प्रति सम्मान।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

इस पुस्तक के किसी खंड अथवा पाठ को पढ़ाने के लिए अनेक विधियाँ हो सकती हैं। ये सभी विधियाँ सभी स्कूलों और कक्षाओं के लिए हर दशा में एक समान लाभकारी नहीं हो सकतीं। इनमे से कौन-सी विधि उचित है, इसका चुनाव आप स्वयं अपनी और बच्चों की आवश्यकताओं और उपलब्ध साधनों को ध्यान में रखकर कर सकते हैं। यहाँ आपकी सुविधा के लिए कुछ संभव सुझाव दिए गए है। आप अपनी आवश्यकता के अनुसार इनमें फेर-बदल कर सकते हैं और साथ ही साथ नए तरीके भी सोच सकते हैं।

१. आप भारत के प्राकृतिक मानचित्र की सहायता से इस खंड के पाठों की रूपरेखा उपस्थित करें और इस बात का प्रयत्न करें कि बच्चे मानचित्र में पाँचों भागों के विस्तार और स्थिति को अच्छी तरह पहचान ले।

प्रत्येक पाठ को पढ़ाते समय पाठ के साथ दिए मानचित्र का प्रयोग करें। पाठो मे दिए गए मानचित्रों का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रहे कि बच्चे प्रत्येक भाग की स्थिति भारत के प्राकृतिक मानचित्र में बता सकें।

पाठ पढ़ाने से पहले 'सीख लो' में दिए गए चित्रों और परिभाषाओं की सहायता से पर्वत श्रेणी, मैदान, पठार, पर्वत चोटी, घाटी, दर्रा, नदी, जल प्रपात का अर्थ स्पष्ट कर दें।

२. आप इस खंड को पढ़ाने के साथ-साथ बच्चों से भूमि की बनावट के आधार पर भारत के प्राकृतिक खंडों का मानचित्र जमीन पर बनवाएँ।

३. अपनी कक्षा में सामाजिक विषय की प्रदर्शनी के लिए निम्नलिखित चित्र इकट्ठे कराइए :

   १. हिमालय में स्थित ऊँची पर्वत चोटियाँ

   २. श्रीनगर, शिमला, अल्मोड़ा, मसूरी, नैनीताल और दार्जिलिंग जैसे पहाड़ी स्थान, इन स्थानों के मकान और वेशभूषा

   ३. सीढ़ीनुमा खेत

   ४. मेजर कोहली की माउंट एवरेस्ट यात्रा

   ५. हिमालय में स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ जैसे तीर्थस्थान

६. मरुद्यान, ऊँट के काफ़िले
७. आधुनिक और पाल के जहाज़
८. अनूप
९. प्रकाश स्तंभ
१०. बंदरगाह
११. हिमालय, उत्तर के उपजाऊ मैदान, मरुस्थल, पठारी प्रदेश तथा समुद्र तटीय मैदान में रहने वाले लोगों के जीवन से संबंधित चित्र।

१. हिमालय पर्वतमाला

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

इस खंड का परिचय देते समय बच्चों को भारत का प्राकृतिक मानचित्र दिखाया जा चुका है। वे जानते है कि भारत के उत्तरी भाग में हिमालय पर्वतमाला है। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से उन्हे हिमालय पर्वतमाला की स्थिति, जलवायु और उपज के विषय में जानकारी कराना इस पाठ का उद्देश्य है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. संसार प्रसिद्ध कई पर्वत चोटियाँ हिमालय पर्वतमाला में हैं।
२. उत्तर भारत की कई बड़ी नदियों का उद्‌गम स्थान हिमालय पर्वतमाला मे है।
३. हिमालय पर्वतमाला का देश की जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
४. हिमालय पर्वतमाला मे पाए जाने वाले वनों से कई प्रकार की लाभकारी चीज़ें मिलती है।
५. हिमालय क्षेत्र में रहने वाले लोगों के रहन-सहन पर यहाँ की भूमि और जलवायु का गहरा प्रभाव पड़ता है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

हिमालय पर्वतमाला की स्थिति और विस्तार का परिचय कराने के लिए आप भारत के प्राकृतिक व राजनैतिक मानचित्र का प्रयोग करें। यदि ऐसा मानचित्र न हो तो पुस्तक मे दिए गए प्राकृतिक और राजनैतिक मानचित्रों का प्रयोग करें।

हिमालय पर्वतमाला का विस्तार पढ़ाने के लिए आप बच्चों से निम्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर

मानचित्र की सहायता से निकलवाएँ :

१. हिमालय पर्वतमाला भारत के किन-किन राज्यों में फैली हुई है ?

२. हिमालय पर्वतमाला भारत के अतिरिक्त कौन-कौन-से देशों मे फैली है ?

शिवालिक, लघुहिमालय और महाहिमालय श्रेणियों का ज्ञान कराने के लिए पाठ में दिए गए हिमालय पर्वतमाला के रेखा मानचित्र का प्रयोग करें।

महाहिमालय पर्वतमाला का ज्ञान कराते समय आप बच्चों का ध्यान पुस्तक में दिए माउंट एव-रेस्ट के फोटो की ओर आकर्षित करें और वार्तालाप द्वारा निम्न जानकारी कराएँ :

—यह भाग पूरे साल बर्फ से ढका रहता है।

—इस पर्वतमाला मे अनेक हिम नदियाँ है जिनसे भारत की कई बड़ी नदियाँ निकली है।

—इस बर्फ के भाग मे ऊँची चोटियों पर विजय प्राप्त करने की इच्छा से आने वाली टोलियाँ खेमे डालकर कुछ समय तक रहती हैं।

मानचित्र की सहायता से आप बताएँ कि महाहिमालय पर्वतमाला के दक्षिण मे स्थित पर्वत-श्रेणियों में जंगल पाए जाते है और इनकी ही घाटियों में अधिकतर लोग रहते हैं। अधिकतर लोग घाटियों में क्यो रहते हैं ? इस प्रश्न पर आप बच्चों से बातचीत करें और कारण स्पष्ट करें।

पुस्तक में दिए गए सीढ़ीदार खेत के चित्र की सहायता से बच्चों को बताएँ कि यहाँ सीढ़ीदार खेत क्यों बनाए जाते है ? यह खेत छोटे क्यों है ? यदि खेत सीढ़ीदार न बनाए जाएँ तो क्या हानि होगी ? दर्रे के बारे में पढ़ाते समय 'सीख लो' में दिए गए चित्र का प्रयोग करें और स्पष्ट करें कि इन पर सँभल कर क्यों चलना पड़ता है। पहाड़ी रास्तों पर सामान ले जाते हुए व्यक्तियों के चित्र पर इस प्रकार के प्रश्न करें :

—ये लोग बोझा अपने सिर अथवा हाथ में न लेकर पीठपर लादकर क्यों ढोते है ?

—ये लोग झुककर क्यों चलते हैं ?

पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ १२ पर हिमालय कहता है—मैं दक्षिण मे समुद्र से उठने वाले भाप-भरे बादलों को रोकता हूँ जिससे उत्तर भारत में वर्षा होती है। यदि बच्चे सामान्य विज्ञान में बादल और वर्षा के बारे में नहीं पढ़ चुके है तो यहाँ पहले यह समझाना आवश्यक होगा।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे तेनसिंह और हिलेरी अथवा मेजर कोहली के हिमालय अनुभव पढ़ें और कक्षा में सुनाएँ।

२. इस खंड की भूमिका में भारत का प्राकृतिक मानचित्र भूमि पर बनाने का सुझाव दिया गया

है। बच्चे पाठ पढ़ने के साथ-साथ उस मानचित्र में हिमालय पर्वतमाला की पर्वत श्रेणियाँ, ऊँची-ऊँची चोटियाँ, दर्रे, जल प्रपात, तराई, आदि दिखाएँ।

मूल्यांकन

प्रश्न १ को कराते समय भारत के प्राकृतिक मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें।

प्रश्न ५ को कराने के लिए आप श्यामपट पर भारत का रेखा मानचित्र बनाएँ और उस पर हिमालय पर्वतमाला की स्थिति बदलकर दिखाएँ। फिर आप बातचीत और प्रश्नों की सहायता से बच्चों से पूछें कि हिमालय की बदली हुई स्थिति का भारत पर क्या प्रभाव होगा।

पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्न प्रश्न भी करें :

१. मानचित्र में देखकर भारत के उन राज्यों और संघीय क्षेत्रों की सूची बनाएँ जिनमें हिमालय पर्वतमाला फैली हुई है।
२. हिमालय क्षेत्र में रहनेवाले लोगों के मुख्य धंधे बताएँ।

२. उत्तर का उपजाऊ मैदान

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिमी बंगाल राज्यों के विषय में पढ़ चुके है और उन्होंने जान लिया है कि इन राज्यों की अधिकांश भूमि मैदानी है। इसी भाग में गंगा और उसकी नदियाँ बहती है। देश के इस भाग में भूमि की बनावट, जलवायु, पैदावार और लोगों का रहन-सहन हिमालय पर्वतमाला के भाग से हर प्रकार भिन्न है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को देश के इस सबसे बड़े उपजाऊ मैदान की जानकारी कराना है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. उत्तर का उपजाऊ मैदान हिमालय पर्वतमाला से निकलने वाली नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी के जमाव से बना है।
२. इस मैदान की समतल भूमि के कारण ही इस भाग में देश के अन्य भागों की अपेक्षा यातायात की अधिक सुविधाएँ हैं।
३. जलवायु और वर्षा की भिन्नता के कारण यहाँ की पैदावार में बहुत भिन्नता है।
४. देश की कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग इस क्षेत्र में रहता है।

५. यहाँ की नदियों के किनारे हमारे अनेक तीर्थस्थान और औद्योगिक तथा व्यापारिक नगर स्थित है।

६. हमारी संस्कृति के विकास में इस क्षेत्र ने बहुत योग दिया है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ को पढ़ाने से पहले आप पुस्तक में दिए गए मैदानी भाग के मानचित्र का भारत के प्राकृतिक मानचित्र के साथ संबंध बताकर इस मैदान की स्थिति को स्पष्ट करें।

आप बच्चों से कहें कि वे पुस्तक में दिए गए मानचित्र में सतलुज, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियाँ देखें और इन नदियों की सहायता से मैदान के तीन भागों का परिचय कराएँ।

इस मैदान की जानकारी गंगा की कहानी के रूप में दी गई है। बच्चों को गंगा की कहानी रुचिकर लगेगी। आप बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए कहें। जब बच्चे गंगा की पहाड़ी यात्रा का वर्णन पढ़ें तो पुस्तक में दिए चित्रों की सहायता से स्पष्ट करें कि पहाड़ी भाग में स्थान-स्थान पर नदी-नाले इसमें मिलते जाते हैं और मैदानी भाग में पहुँचने तक इसका आकार काफी बड़ा हो जाता है। मैदानी भाग में मिलने वाली सहायक नदियों को मानचित्र में दिखाएँ। कुछ बच्चे शायद हरिद्वार गए हों आप उन्हें आँखों देखे अनुभव के आधार पर पुस्तक मे दिए गए फोटो में दिखाई गई चीजों का हाल सुनाने को कहें।

पुस्तक में दिए गए नगरों को मानचित्र में दिखाएँ। बातचीत द्वारा बच्चों को हरिद्वार, इलाहाबाद, मथुरा आदि तीर्थस्थानों का महत्त्व बताएँ।

इस पाठ में यह बताना आवश्यक है कि इस मैदान की भूमि उपजाऊ है। इसे समझने के लिए भारत के प्राकृतिक मानचित्र पर बच्चों का ध्यान आकर्षित कर आप निम्न प्रकार के प्रश्न करें :

१. उत्तर भारत की नदियों के नाम बताओ ?

२. बाढ़ के समय नदी की क्या दशा होती है ?

३. बाढ़ का लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

बच्चे ऐसे प्रश्नों के उत्तर अवश्य देंगे, परंतु प्रश्न ३ के संबंध में वे शायद हानियाँ ही बताएँ। आप यहाँ पर ही नदियों द्वारा मैदान बनाने और उसकी उपजाऊ शक्ति पर प्रभाव डालने के विषय में बता सकते हैं।

इस मैदान में सब जगह जलवायु और वर्षा एक जैसी नहीं है। विभिन्न भागों की मुख्य उपज बताकर वहाँ की जलवायु और वर्षा से इसका संबंध स्पष्ट करें।

इस पाठ मे डेल्टा (नदी का मुहाना) शब्द प्रयोग में आया है इसे समझाने के लिए आप बच्चों से डेल्टे का मॉडल बनवाएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चों को आप यमुना नदी के संबंध में आवश्यक जानकारी देकर पुस्तक में दी गंगा की कहानी की भाँति कहानी लिखने को कहें।

२. इस मैदान में स्थित तीर्थस्थानों और औद्योगिक नगरों की सूची बनाएँ। औद्योगिक नगरों की सूची बनाने के लिए अंत में दी गई प्रमुख औद्योगिक नगरों की सूची का उपयोग करें।

३. भूमि पर बनाए जाने वाले भारत के प्राकृतिक मानचित्र में बच्चे उत्तर का उपजाऊ मैदान दिखाएँ।

मूल्यांकन

प्रश्न १ को कराते समय भारत के प्राकृतिक मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें और नदियों की सहायता से उत्तर के उपजाऊ मैदान के तीन भागों के नाम मालूम करें।

प्रश्न ३ का उत्तर निकलवाने के लिए निम्न प्रकार के कुछ कारण आप श्यामपट पर लिखकर बच्चों से कहें कि वे सही कारणों पर (√) निशान लगाएँ :

—यहाँ की भूमि खेती के लिए अच्छी है।

—यहाँ पर रेल और सड़क मार्ग बहुत हैं।

—इस भाग में बहुत से तीर्थस्थान हैं।

—यहाँ की भूमि समतल है।

—यहाँ शिक्षा के बहुत से केंद्र हैं।

पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त आप निम्नलिखित प्रश्न भी करें।

१. यहाँ के मुख्य उद्योग चीनी, कपड़ा और चमड़ा हैं। क्यों ?

२. इस मैदान में बहने वाली नदियों से इसको उपजाऊ बनाने में किस प्रकार सहायता मिलती है ?

३. भारत का मरुस्थल

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे जानते है कि भूमि सब जगह एक-सी नहीं है। वे हिमालय पर्वतमाला और उत्तर के उप-जाऊ मैदान के विषय में पढ़ चुके हैं। इस पाठ में बच्चों को भारत के मरुस्थल की जानकारी कराई गई

है। वे यह भी जान लेंगे कि मैदान होते हुए भी इस मरुस्थली भाग में रहने वालों का जीवन उत्तर के उपजाऊ मैदान जैसा नहीं है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे

१. मरुस्थली प्रदेश में दूर-दूर तक रेत ही रेत है और कहीं-कहीं रेत के ऊँचे टीले हैं।
२. इस क्षेत्र में दिन के समय बहुत गर्मी और रात को ठंड पड़ती है।
३. इस क्षेत्र मे पानी की अत्यंत कमी के कारण उपज बहुत कम है।
४. रेतीला होने के कारण इस क्षेत्र में सड़कों और रेलों की कमी है।
५. मरुस्थली होने के कारण इस क्षेत्र की जनसंख्या कम है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

भारत के मरुस्थल की स्थिति समझाने के लिए भारत के प्राकृतिक और राजनैतिक मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें।

इस क्षेत्र में पानी की कमी बताने के लिए आप बच्चों से पुस्तक में दिए गए भारत के मरुस्थल के मानचित्र की तुलना उत्तर के उपजाऊ मैदान के मानचित्र से कराएँ। दोनों मानचित्रों मे अंतर मालूम करने के लिए आप प्रश्न इस प्रकार करें कि बच्चे भारत के मरुस्थल में नदियों का अभाव बता सकें। इस भाग में वर्षा कम होती है। आप यहीं पर पानी की कमी और उपज का संबंध भी बता सकते है।

पुस्तक में दिए मरुद्यान का वर्णन आप चित्र की सहायता से स्पष्ट करें।

इस क्षेत्र में यातायात की कमी को समझाने के लिए आप भारत के यातायात मानचित्र का प्रयोग करें और सड़कें तथा रेल मार्ग बनाने में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में बातचीत करें।

पुस्तक में दिए गाड़िया लुहार के चित्र पर बातचीत और प्रश्नों द्वारा बच्चों को निम्न प्रकार की जानकारी कराएँ :

—मकान बनाकर यह लोग सदैव एक स्थान पर नहीं रहते है।

—ये अपना सारा सामान गाड़ियों में लादकर स्थान-स्थान पर घूमते फिरते हैं।

—ये लोग लोहे का काम करके अपनी आजीविका कमाते है।

मानचित्र में गंगानगर की स्थिति दिखाएँ और सूरतगढ़ फार्म के बारे में बातचीत करें और उन्हें बताएँ कि सरकार ने यह फार्म बहुत बड़े पैमाने पर बनाया है। यहाँ पर मशीनों से खेती होती है और खेती के सुधार के लिए परीक्षण किए जाते हैं।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. भूमि पर बनाए जाने वाले भारत के प्राकृतिक मानचित्र में मरुस्थली प्रदेश दिखाएँ।
२. बच्चों से कहें कि वे नगर अथवा गाँव के समीप आए गाड़ियालुहार के परिवार से मिलकर उनके भोजन, वेशभूषा, दिनचर्या, घर के सामान आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करें।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्न प्रश्न करें :

१. मरुस्थली प्रदेश में रहने वाले लोगों को कठिन परिश्रम क्यों करना पड़ता है ?
२. ऊँट को मरुस्थल का जहाज़ क्यों कहते है ?
३. मरुस्थल की भूमि खेती के लिए अच्छी है परंतु फिर भी उपज कम होती है। क्यों ?

४. पठारी प्रदेश

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे देश के तीन प्राकृतिक भागों—हिमालय पर्वतमाला, उत्तर के उपजाऊ मैदान और मरुस्थली प्रदेश के विषय में जानकारी प्राप्त कर चुके है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को पठारी प्रदेश की जानकारी कराना है। वहाँ न तो हिमालय जैसे ऊँचे पर्वत हैं न उत्तर के उपजाऊ मैदान जैसी समतल भूमि और न मरुस्थल जैसा सूखा और शुष्क मैदान। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. पठारी प्रदेश की भूमि अधिकतर पथरीली और ऊँची-नीची है।
२. इस भाग में पाए जाने वाले मैदानों को नदियों ने पहाड़ों की कोमल चट्टानों को सदियों तक घिसकर और काटकर बनाया है।
३. इस भाग की नदियों का बहाव अधिकतर तेज़ है।
४. इस भाग में ही अधिकतर खनिज पदार्थ पाए जाते हैं।
५. इस भाग मे आने-जाने की सुविधाएँ कम हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

भारत के प्राकृतिक और राजनैतिक मानचित्र में पठारी प्रदेश की स्थिति स्पष्ट करें। इस पाठ

को पढ़ाने के लिए पाठ के शुरू में दिए गए मानचित्र का प्रयोग करें। पुस्तक में बताए गए पठारी प्रदेश के विभिन्न भागों की जानकारी पहाड़ियों और नदियों की सहायता से कराएँ। पुस्तक में दिए खड्ड के चित्र पर बच्चों को बातचीत द्वारा समझाएँ कि ये खड्ड किस प्रकार बने हैं।

पठारी प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग के विषय में पढ़ाते समय छत्तीसगढ़ मैदान की तुलना उत्तर के उपजाऊ मैदान से कराएँ और दोनों में भिन्नता स्पष्ट करें। पुस्तक में दिए गए खनिज मानचित्र पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। वे देखें कि पठार के इस भाग में कौन-कौन-से खनिज पदार्थ पाए जाते हैं।

पठार के मध्य भाग में काली मिट्टी, लावा का उल्लेख किया गया है। यदि संभव हो तो ज्वालामुखी और लावा के चित्र एकत्र करके बच्चों को दिखाएँ। वार्तालाप द्वारा यह स्पष्ट करें कि वर्षा पानी, धूप, हवा आदि ने किस प्रकार लावा को फैलाने और इस भाग में काली मिट्टी बनाने में सहायता दी। इस मिट्टी की तुलना अपने राज्य मे पाई जाने वाली मिट्टी से करें।

मानचित्र की सहायता से पश्चिमी और पूर्वी घाट की स्थिति और अर्थ स्पष्ट करें और दोनों में अंतर बताएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. भूमि पर बनाए जाने वाले भारत के प्राकृतिक मानचित्र में पठारी प्रदेश बनाएँ और उसमे पुस्तक में दिए गए पठारी क्षेत्र के चार भाग दिखाएँ। ध्यान रहे कि बच्चे पठार का अर्थ अच्छी तरह समझ जाएँ। हिमालय पर्वतमाला, मैदान और पठारी क्षेत्र में अंतर की जानकारी भी उन्हें पठार का अर्थ स्पष्ट करने में सहायक होगी।

२. पठारी क्षेत्र के वनों से मिलने वाली लाभकारी चीजों की सूची बनाएँ और उनके नमूने इकट्ठे करें।

मूल्यांकन

प्रश्न १ को कराने के लिए भारत के प्राकृतिक राजनैतिक मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें।

प्रश्न ४ को करते समय बच्चे यह अवश्य जान लें कि पठारी क्षेत्र के मैदान गंगा के मैदान की भाँति नदी द्वारा लाई गई मिट्टी के जमाव से नहीं बने हैं बल्कि नदियों द्वारा चट्टानों के घिसने से बने हैं।

प्रश्न ५ को कराते समय पठार के उत्तर पूर्वी भाग में आने-जाने की सुविधाएँ कम होने का भी बच्चों को ज्ञान कराएँ। मानचित्र की सहायता से आप बच्चों से आने-जाने की सुविधाओं के विकास के रास्ते में आनेवाली कठिनाइयों के विषय में चर्चा करें।

पुस्तक मे दिए गए प्रश्नों के साथ-साथ आप निम्नलिखित प्रश्न भी पूछें :

१. लोहा और इस्पात तथा इससे संबंधित कारखाने अधिकतर पठार के पूर्वी भाग में क्यों पाए जाते हैं ?
२. पठारी क्षेत्र की नदियों का बहाव तेज क्यों है ?
३. पठारी क्षेत्र में अधिक लोग क्यों नहीं रहते हैं ?
४. पठारी क्षेत्र की नदियों में पूरे वर्ष पानी नहीं रहता फिर भी नागार्जुन सागर और तुंगभद्रा जैसे कई बाँध क्यो बनाए जा रहे हैं।

५. समुद्र तटीय मैदान

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे उत्तर के उपजाऊ मैदान के विषय मे पढ़ चुके है। इस पाठ मे वे समुद्र तटीय मैदान के विषय में जानकारी प्राप्त करेगे। इस मैदान की बनावट और जलवायु उत्तर के मैदान से बहुत भिन्न है। इतना ही नहीं यहाँ के रहने वाले लोगों का जीवन भी भिन्न है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. पश्चिमी और पूर्वी तटीय मैदान पश्चिम और पूर्व में समुद्र तट के साथ-साथ फैले हुए है।
२. पश्चिमी तटीय मैदान पूर्वी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक हरा भरा है।
३. समुद्र तटीय मैदान में रहने वाले लोगों के जीवन पर समुद्र का बहुत अधिक प्रभाव है।

पढ़ाने के लिए सुझाव

इस पाठ को पढ़ाने के लिए आप भारत के प्राकृतिक और राजनैतिक मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें। बच्चों को पश्चिमी और पूर्वी घाट की पहाड़ियों की जानकारी है। आप उनसे कहें कि वे यह पहाड़ियाँ मानचित्र में दिखाएँ। इन पहाड़ियों के पश्चिम और पूर्व में समुद्र के साथ-साथ फैले समुद्र तटीय मैदान की स्थिति मानचित्र में दिखाएँ।

मानचित्र और बातचीत द्वारा उत्तर के उपजाऊ मैदान तथा समुद्र तटीय मैदान में समानता और असमानता स्पष्ट करें।

पुस्तक में यह पाठ काल्पनिक समुद्र यात्रा के रूप में पढ़ाया गया है। आप बच्चों को मानचित्र में ओखा की स्थिति दिखाएँ और बच्चों को पुस्तक में दिए गए रेल-मार्ग-मानचित्र में अपने नगर से

ओखा तक का मार्ग देखने को कहें। बच्चे स्टेशन से ओखा आने वाली गाड़ी का समय मालूम करें अथवा आप बच्चों को रेलवे समय सारिणी देखना सिखाएँ और बच्चे स्वयं ओखा जाने वाली गाड़ी का समय मालूम करें।

पाठ का आरंभ पुस्तक में दिए गए बंदरगाह के फोटो से करें। यदि कक्षा के किसी बच्चे को समुद्र का अनुभव हो तो उसे बंदरगाह को अपने शब्दों में वर्णन करने को कहे।

बच्चों को यात्रा शुरू कराने से पहले समुद्री यात्रा की जानकारी कराने में यदि संभव हो तो किसी ऐसे व्यक्ति को कक्षा में बुलाएँ जिसने समुद्री यात्रा की हो। वह बच्चों को निम्नलिखित जानकारी कराए :

—जहाज़ के अंदर क्या-क्या सुविधाएँ प्राप्त हैं ?

—यात्रा करते समय अपने साथ क्या-क्या सामान ले जाना पड़ता है ?

यदि ऐसा संभव न हो तो आप दीवार पर भारत का मानचित्र लटकाएँ और बच्चों को पुस्तक में दी गई यात्रा को पढ़ने के लिए कहे। बालक एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा पढ़ें। इस प्रकार कई बच्चे पढ़ने में भाग ले सकेंगे। पाठ ऐसे रोचक ढंग से पढ़ाएँ कि बच्चे यह अनुभव करें कि वे सचमुच ही यात्रा कर रहे है। और पाठ में दिए गए समुद्र तटीय मैदान स्वयं देख रहे है। मार्ग में आने वाले प्रायद्वीप, द्वीप, खाड़ी अंतरीप को मानचित्र मे दिखाने के साथ-साथ एक बार फिर 'सीख लो' में दिए गए चित्रों की सहायता से इनका अर्थ स्पष्ट करिए।

पाठ पूरा हो जाने पर आप पुस्तक में दिए चित्रों की सहायता से आधुनिक जहाज और पाल के जहाज़ का अंतर बातचीत द्वारा स्पष्ट करें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. भारत के रेखा मानचित्र में बच्चों को प्रायद्वीप, बंदरगाह, द्वीप, अंतरीप और खाड़ी भरने को कहें।
२. इस खंड के साथ आरंभ किए ज़मीन पर भारत के मानचित्र में समुद्र तटीय मैदान बनवाएँ। इस मैदान को बनवाते समय इस बात का ध्यान रखें कि यह उत्तर के मैदान की भाँति समतल नहीं है और पश्चिमी तटीय मैदान में पूर्वी तटीय मैदान से अधिक ढलान है।
३. बच्चों से बंदरगाह और अनूप का मॉडल बनवाएँ।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्न करे :

१. पश्चिमी समुद्र तटीय मैदान के मलाबार तट पर सिंचाई की आवश्यकता क्यों नहीं होती है ?
२. मलाबार तट पर अधिकतर व्यापार के लिए नाव का प्रयोग क्यों किया जाता है ?
३. समुद्र तटीय मैदान में अधिकतर चावल की खेती क्यों की जाती है ?
४. अनूप किसे कहते है ? अनूपों से मलाबार तट पर रहने वाले लोगों को क्या लाभ है ?

खंड २

भारत की विकास योजनाएँ

बच्चे अपने राज्य और दूसरे राज्यों के विषय में अच्छी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने इस पुस्तक के प्रथम खंड के अध्ययन से यह भी जान लिया है कि हमारा देश एक विशाल देश है। इसमें अनेक नदियाँ है। देश में विभिन्न प्रकार की फसलें पैदा की जाती हैं और वनों तथा खनिज पदार्थों के सहारे अनेक उद्योग स्थापित है। इतनी सुविधाएँ होते हुए भी देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए भोजन, कपड़ा और मकान जैसी आवश्यक चीज़ों की कमी है। इतना ही नहीं बिजली, रेडियो, बिजली का पंखा, टेलीफोन आदि जैसी जीवन को सुखी बनाने वाली चीज़ें तो करोड़ों लोगों के घरों में नहीं हैं। इस खंड के अध्ययन से बच्चे यह जान लेंगे कि देश में रहने वालों के जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए हमें अपने प्राकृतिक साधनों का सदुपयोग करना आवश्यक है। इसीलिए हम पंचवर्षीय योजनाएँ बनाकर देश की गरीबी को दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस खंड के पाठों के अध्ययन से

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमारा देश विभिन्न प्रकार की मिट्टी, खनिज पदार्थ और वन जैसी प्राकृतिक संपदा में धनवान है।

२. देशवासियों के जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए हम अपने प्राकृतिक साधनों का उपयोग कर रहे हैं।

३. प्राकृतिक साधनों का अधिकतम लाभ उठाने के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गई हैं।

४. पंचवर्षीय योजनाओं की सफलता देश में रहने वालों के सहयोग पर निर्भर है।

५. योजनाओं की सफलता से देशवासियों को जीवन की अधिक सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. छोटे-मोटे काम की योजना बनाना और उसमें भाग लेना।

२. अपने समय और साधनों का अधिकतम उपयोग करना।

३. अपनी बात को उचित शब्दों में कहना और दूसरों की बात को ध्यान पूर्वक सुनना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. आपस में सहयोग

२. व्यक्तिगत और सामूहिक उत्तरदायित्व

पढ़ाने के लिए सुझाव :

१. इस खंड के पाठों को पढ़ाने से पहले आप कक्षा में बच्चों से निम्न प्रकार वार्तालाप करें :

बारी-बारी कुछ बच्चे अपने को भारत का प्रधानमंत्री मानकर बताएँ कि वे देश के लोगों के जीवन में क्या सुधार करना चाहेंगे। कक्षा के दूसरे बच्चे भी बीच-बीच में प्रश्न करें और सुझाव दें। इस प्रकार के वार्तालाप से शायद इस प्रकार के सुझाव निकलेंगे :

—लोगों को अधिक-से-अधिक अच्छा भोजन प्राप्त हो।

—सबको पर्याप्त अच्छे कपड़े प्राप्त हों।

—सबके पास रहने के लिए अच्छे मकान हों।

—मकानों में बिजली, पानी, आदि की सुविधा हो।

बच्चों द्वारा दिए गए सुझाव आप श्यामपट पर लिखते जाएँ। इनमें से कोई एक समस्या लें और इसे हल करने के लिए बच्चों से सुझाव निकलवाएँ। उदाहरण के लिए, "अधिक अनाज पैदा करना" समस्या के निम्न पहलुओं पर बच्चों से बातचीत करें :

—खेती के लिए अधिक भूमि का प्रयोग

—खेतों की पैदावार बढ़ाना

—रासायनिक खाद का प्रयोग

—बढ़िया बीज का प्रयोग

—अधिक रासायनिक खाद उपलब्ध करना

—सिंचाई की सुविधाएँ प्रदान करना

—फसलों में फेर-बदल

उपरोक्त वार्तालाप से बच्चे अच्छी तरह समझ लें कि देश को उन्नत बनाना बड़ा काम है। इसमें समय बहुत लगता है और अधिक धन की आवश्यकता होती है। काम को जल्दी करने के लिए योजनाएँ बनानी पड़ती हैं। योजनाओं को सफल बनाने के लिए देश के सब लोगों का सहयोग और कठिन परिश्रम आवश्यक है।

२. आप इस खंड को पढ़ाने के साथ-साथ बच्चों से किसी बाँध और आदर्श गाँव का मॉडल बनवाएँ।

३. अपनी कक्षा में सामाजिक विषय की प्रदर्शनी के लिए निम्न चीजें एकत्र करें :

—विभिन्न प्रकार की मिट्टी के नमूने
—विभिन्न उपज के नमूने
—बढ़िया बीज के नमूने
—विभिन्न खनिज पदार्थों के नमूने
—विभिन्न नदी-घाटी योजनाओं से संबंधित चित्र।
—खेती के प्रयोग में आने वाले नए और पुराने औज़ारों के चित्र।

६. हमारे खेतों की बढ़ती उपज

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे कक्षा तीन में भूमि के विभिन्न रूपों और प्रयोगों के विषय में पढ़ चुके हैं। उन्होंने इस पुस्तक के प्रथम खड में भूमि की बनावट के विषय में भी ज्ञान प्राप्त कर लिया है। बच्चे यह भी जानते हैं कि भूमि पर विभिन्न प्रकार की उपज होती है और कुछ भूमि ऐसी है जहाँ कुछ भी पैदा नहीं होता है। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से भूमि के महत्त्व, और देश में खेतों की उपज की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए प्रयोग किए गए तरीकों की जानकारी कराना इस पाठ का उद्देश्य है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे

१. खेती के लिए उपजाऊ भूमि आवश्यक है।

२. हमारे देश में अलग-अलग उपज के लिए उपयुक्त मिट्टी मिलती है।

३. देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अधिक अनाज और उद्योगों के लिए कच्चा माल खेतों

में पैदा करना है।

४. एक ही भूमि के टुकड़े में बार-बार फसल बोने से खेती की मिट्टी की उपज-शक्ति कम हो जाती है। खाद तथा दूसरे वैज्ञानिक तरीकों से मिट्टी की उपज शक्ति को बढ़ाया जाता है।
५. हमारी पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा खेती के सुधार के लिए विभिन्न उपचार किए जा रहे है।
६. खेतों की उपज बढ़ाने के लिए सरकारी सहायता के साथ-साथ किसान का परिश्रम बहुत आवश्यक है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चे जानते है कि उनका भोजन कहाँ से प्राप्त होता है, पशुओं के लिए चारा कहाँ से आता है। बच्चों की इस जानकारी का लाभ उठाकर निम्न प्रकार के प्रश्न करें :

—हमारे भोजन के लिए अनाज और सब्जियाँ कहाँ से आती हैं ?

—पशुओं के लिए चारा कहाँ से आता है ?

—चीनी और कपड़ा जैसे उद्योगो के लिए गन्ना और कपास कहाँ से प्राप्त होता है ?

—खेती के लिए क्या-क्या चीजें आवश्यक है ?

—क्या खेती की मिट्टी के बिना खेती करना सभव है ?

—पुस्तक में दिए गए दस व्यक्तियों के चित्र में देखकर बताओ कि कितने लोग खेती के काम मे लगे हुए है ?

बच्चों के उत्तर की सहायता से आप खेती और खेती की मिट्टी का महत्त्व बताएँ।

बच्चे अपने राज्य और देश के दूसरे राज्यों के विषय मे पढ़ चुके हैं और वे जानते हैं कि कहीं भूमि खेती के लिए अच्छी है तो कहीं खेती के लिए उपयुक्त नहीं। देश में पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की मिट्टी के नमूने बच्चों को दिखाएँ और उनके गुण स्पष्ट करें। साथ ही साथ मानचित्र की सहायता से यह भी स्पष्ट करें कि अलग-अलग प्रकार की मिट्टी में अलग-अलग उपज पैदा होती हैं।

देश की विभिन्न उपज की जानकारी कराने पर आप बच्चों से देश मे भोजन की कमी पर बातचीत करें। इस बातचीत द्वारा बच्चे निम्नलिखित बातें समझ लें :

—देश में अनाज की कमी के क्या कारण हैं ?

—अनाज की कमी को कैसे दूर किया जा सकता है ?

शायद प्रश्न २ के उत्तर में कुछ बच्चे कहें कि अधिक भूमि पर खेती की जाए और खेतों की उपज बढ़ाने का प्रयत्न किया जाए। इस समय ही आप बच्चों से कहें कि यदि तुमसे खेतों की उपज बढ़ाने के लिए कहा जाए तो तुम क्या करोगे ? बच्चे विभिन्न प्रकार के उत्तर देंगे। आप उनके उत्तर श्यामपट पर

लिखते जाएँ। फिर आप बच्चों से कहें कि पुस्तक में दिया गया दो किसानों का वार्तालाप पढ़ें और अपने सुझावों को मिलाएँ।

बच्चो के सुझावों को पुस्तक में दिए गए चित्रों की सहायता से स्पष्ट करें और बताएँ कि किस प्रकार मशीनों के प्रयोग से खेतों में उपज बढ़ती है।

बच्चों को खेतों में उपज बढ़ाने के तरीकों की दी गई जानकारी के आधार पर निम्न प्रकार के प्रश्नों पर बातचीत करें :

१. क्या हमारे किसान ट्रैक्टर, बीज बोने और फसल काटने की मशीनें खरीद सकते हैं ?
२: क्या छोटे-छोटे खेतों में खेती के काम में आने वाली मशीनों का प्रयोग किया जा सकता है ?
३. क्या हमारे किसान खेतों को बडा बना सकते हैं ?
४. क्या हमारे किसान खेती के लिए अधिक भूमि प्राप्त कर सकते हैं ?
५. क्या हमारे किसान बढ़ती हुई खाद की माँग को पूरा कर सकते हैं ?

इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर बच्चे अवश्य देंगे। उनके उत्तर की सहायता से आप बताएँ कि यह काम किसान स्वयं नहीं कर सकते। इन कार्यों में सरकार सहायता देती है। सरकार इस कार्य को करने के लिए योजनाएँ बनाती है। आप पंचवर्षीय योजनाओं में से निम्न प्रकार के उदाहरण देकर इसे और भी स्पष्ट करें :

—बड़े-बड़े बाँध बनाकर सिंचाई के लिए नहरें बनाई गई हैं।

—रासायनिक खाद बनाने के कारखाने बनाए जा रहे हैं।

खेती को उन्नत बनाने के तरीकों की जानकारी कराते समय यह बताना न भूले कि हवा और पानी से खेती की मिट्टी को हानि होती है। यदि पाठशाला के समीप आँधी अथवा वर्षा से मिट्टी के कटाव के कुछ स्थल हों तो आप बच्चों को दिखाने ले जाएँ। इस मिट्टी के कटाव को कैसे रोका जाए इसकी जानकारी कराने के लिए बच्चों से पाठ पढ़ने के लिए कहे।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे खेतों में प्रयोग में आने वाली मशीनों के चित्र और मशीन से बनी खाद के नमूने इकट्ठे करें।
२. अपनी पाठशाला में सामुदायिक विकास खंड के किसी अधिकारी को बुलाएँ और बच्चे उनसे मालूम करें कि खेती की उपज बढ़ाने के लिए वे किसानों की किस प्रकार सहायता करते हैं।
३. बच्चे एक छोटा-सा अभिनय करें जिसमें यह दिखाएँ कि वे किस प्रकार एक पुराने ढंग से

खेती करने वाले किसान को खेतों की उपज बढ़ाने के लिए खेती के सुधारों की जानकारी कराएँगे।

मूल्यांकन

१. गिरधारी के पास खेती की बहुत-सी ज़मीन है। वह चाहता है कि उसके खेतों में अधिक अनाज पैदा हो। आप उसे सलाह दें कि वह क्या-क्या तरीके अपनाए।
२. रामू ने एक फसल काटने के बाद दूसरी फसल बोदी। दूसरी फसल पहले से कम हुई। फसल की कमी के दो कारण बताइए।
३. नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी को खेती के लिए अच्छा कहा जाता है परंतु नदियों के समीप की भूमि में कम खेती की जाती है। ऐसा क्यों है ?
४. बच्चे अपने अनुभव के आधार पर मिट्टी के उपयोगों की सूची बनाएँ।

७. हमारी सिंचाई और बिजली योजनाएँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पिछले पाठ में बच्चों ने पढ़ा है कि हम बढ़ती हुई जनसंख्या के भोजन और उद्योगों के लिए कच्चे माल की माँग को पूरा करने के लिए खेतों की उपज बढ़ा रहे हैं। साथ ही साथ देश में नए-नए उद्योग भी स्थापित हो रहे हैं। बढ़ती खेती और उद्योगों के लिए अधिक सिंचाई और बिजली की आवश्यकता है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह बताना है कि हम किस प्रकार देश की नदियों का पानी काम में लाकर बढ़ती सिंचाई और बिजली की माँग को पूरा कर रहे हैं। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमारे देश में अनेक नदियों पर नदी घाटी योजनाएँ बनाई गई है।
२. इन योजनाओं के अधीन बाँध बनाकर नदियों के पानी को रोककर बिजली बनाई जाती है।
३. इन योजनाओं द्वारा रेतीले भाग उपजाऊ बन रहे हैं।
४. इन योजनाओं के कारण अनेक गाँवों में बिजली पहुँच गई है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चे जानते है कि भारत के लोग अधिकतर खेती करते हैं। उनकी इस जानकारी के आधार

पर आप निम्न प्रकार के प्रश्न करें :

—भारत में लोगों का मूल धंधा क्या है ?

—देश के किस भाग में खेती अधिक की जाती है ?

—वे कौन-कौन-सी सुविधाएँ हैं जिनके कारण उत्तर के उपजाऊ मैदान में रहने वाले लोग अधिकतर खेती करते है ?

—खेतों की उपज बढ़ाने के लिए नदियों से क्या लाभ हो सकता है ?

बच्चों के उत्तर की सहायता से स्पष्ट करें कि खेतों की उपज बढ़ाने के लिए नदियों से सिंचाई के लिए अधिक पानी लेना और बाढ़ रोकना आवश्यक है।

बाढ़ रोकने और सिंचाई के लिए अधिक पानी प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए इसकी जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को पाठ पढ़ने के लिए कहें। जब बच्चे पाठ पढ़ चुकें तो आप बच्चो से पूछें कि सिंचाई के लिए पानी किस प्रकार प्राप्त किया जाता है। बच्चों के उत्तर को आप पुस्तक में दिए चित्रों पर बातचीत करके स्पष्ट करें। इस बातचीत में आप यह भी स्पष्ट कर दें कि बाढ़ रोकने और सिंचाई के लिए पानी प्राप्त करने के साथ-साथ पानी को रोक कर बिजली भी बनाई जाती है।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. विभिन्न नदी-घाटी योजनाओं से संबंधित चित्र इकट्ठे करे।

२. पुस्तक में दिए मानचित्र की सहायता से निम्न चार्ट बनाएँ :

बाँध का नाम	नदी का नाम	किस राज्य में है	

३. सब बच्चे मिलकर भूमि पर भाखड़ा बाँध का मॉडल बनाएँ।

मूल्यांकन

१. भारत के राजनैतिक रेखा मानचित्र में उन स्थानों पर (×) निशान लगाएँ जहाँ बाँध बनाए जा रहे हैं।

२. दक्षिण भारत की नदियों में पानी अधिकतर बरसात के दिनों में रहता है फिर भी बाँध

बनाए जा रहे हैं। इन बाँधों का क्या लाभ होगा ?

३. भाखड़ा नंगल बाँध की जानकारी के आधार पर बाँधों से होने वाले लाभों की सूची बनाएँ। (बच्चों की इस जानकारी के आधार पर आप उन्हें बताएँ कि इसीलिए इन्हें बहुमुखी नदी घाटी योजनाएँ कहते है) ।

८. हमारे बढ़ते उद्योग

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे देश के विभिन्न राज्यों और संघीय क्षेत्रों के विषय में पढ़ चुके है और जान गए हैं कि सभी राज्यों में बहुत से कारखाने और उद्योग हैं तथा नए-नए उद्योग स्थापित हो रहे है। इन कारखानों में रोज़ काम में आने वाली अनेक चीजें जैसे सूती कपड़ा, मोज़े-बनियान, लालटेन, बिजली के पंखे आदि बनते हैं। कारखानों में बनी चीजों के प्रयोग से जीवन सुखी बनता है और काम करने वालों को शारीरिक श्रम भी कम करना पड़ता है। बच्चों की इस जानकारी के आधार पर उन्हें देश के कुछ ऐसे बड़े उद्योगों की जानकारी कराना इस पाठ का उद्देश्य है जहाँ जीवन के लिए बहुत-सी उपयोगी चीजें बनती हैं, इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. नए-नए उद्योगों की स्थापना से हमारा देश आगे बढ़ रहा है।
२. उद्योगों की स्थापना से बहुत से लोगों को नए-नए काम मिलते है।
३. औद्योगिक विकास से देशवासियों के रहन-सहन का ढंग बदल रहा है।
४. पंचवर्षीय योजनाओं में उद्योगों के विकास के लिए व्यवस्था की गई है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

भारत के मानचित्र का प्रयोग करते हुए पाठ में बताए गए औद्योगिक केंद्र दिखाएँ। लोहा-इस्पात के कारखाने जहाँ स्थित हैं वहाँ पर स्थापित होने का कारण स्पष्ट करें और बताएँ कि इनका कच्चे माल की उपलब्धि से क्या संबंध है।

इस पाठ में देश के कुछ उद्योगों का उल्लेख है परंतु बच्चों को छोटे-बड़े उद्योगों में बनी हुई बहुत-सी चीज़ों की जानकारी है। अतः आप बच्चों को बातचीत द्वारा देश के दूसरे उद्योगों की जानकारी

भी कराएँ। बच्चों के सामने कारखानों में बनी और हाथ से बनी चीज़ों के नमूने रखें और बातचीत द्वारा दोनों प्रकार की वस्तुओं में अंतर स्पष्ट करें।

इस पाठ को पढ़ाने के लिए जहाँ तक संभव हो आप बच्चों को किसी कारखाने में ले जाएँ जिससे बच्चे वहाँ काम मे आने वाली छोटी बड़ी मशीनें देख सकें और वे यह भी देख सकें कि कारखाने में लोग मिलकर किस प्रकार काम करते है। इस भ्रमण का एक लाभ यह भी होगा कि आप बच्चों को स्पष्ट कर सकेंगे कि मशीनों से एक दिन मे बहुत-सी चीज़ें बन जाती है।

कारखानों में बहुत से लोग काम करते है। बच्चों की इस जानकारी के आधार पर आप पूछें कि बढ़ते उद्योगों से लोगों के व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ेगा। बच्चों के उत्तर की सहायता से आप यह भी स्पष्ट कर सकेंगे कि उद्योगों के बढ़ने से बढ़ती हुई जनसंख्या को नए-नए काम मिलते हैं और अधिक लोग खेती पर निर्भर नहीं रहते।

आप बच्चों से विभिन्न उद्योगों में बनने वाली चीज़ों की सूची बनाने को कहें और इन वस्तुओं के प्रयोग के संबंध में बातचीत करें। इस बातचीत में आप ध्यान रखें कि बच्चे यह अवश्य समझ जाएँ कि उद्योगों से हमारा रहन-सहन बदलता है।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. कुछ होशियार बच्चे 'भारत १९७०' पुस्तक की सहायता से ऐसे उद्योगों की सूची बनाएँ जो योजना काल में आरंभ किए गए है।

२. हाथ से बनी चीज़ों के लिए प्रसिद्ध नगरों की सूची बनाएँ।

३. पुस्तक के अंत में दिए प्रमुख औद्योगिक नगरों की सूची की सहायता से खनिज-तेल, रासायनिक खाद और कपड़ा उद्योग के केंद्रों की सूची बनाएँ।

मूल्यांकन

आप बच्चों के दैनिक व्यवहार मे देखें कि उनमें देश के बढ़ते हुए उद्योगों के प्रति गौरव अनुभव होता है और वे हाथ से बनी चीज़ों के सौंदर्य को पहचानते हैं।

९. हमारे गाँव आगे बढ़ रहे हैं

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे देश के विभिन्न राज्यों के विषय में पढ़ चुके हैं और जानते हैं कि प्रत्येक राज्य में बहुत-

से गाँव है। वे गाँव के लोगों के जीवन के बारे मे भी पढ़ चुके है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. भारत के अधिकांश लोग गाँव में रहते है।
२. देश को उन्नत बनाने के लिए गाँवों का सुधार करना आवश्यक है।
३. सरकार सामुदायिक विकास खंड द्वारा गाँव की उन्नति में लोगों की सहायता कर रही है।
४. गाँव में रहने वाले आपस में मिलकर गाँव में विभिन्न प्रकार के सुधार कर रहे हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चों के अनुभव के आधार पर अथवा गाँव दिखाकर आप बच्चो से गाँव वालों के जीवन के संबंध मे बातचीत करे। बच्चों से निष्कर्ष निकलवाएँ कि गाँव मे असंतोषजनक मकान, गंदगी, अशिक्षा आदि है जिनमें सुधार की आवश्यकता है।

अब आप बच्चों से मालूम करें कि गाँव का सुधार करने के लिए क्या करना चाहिए। बच्चे कुछ सुझाव देंगे। उनके सुझाव आप श्यामपट्ट पर लिखें। फिर आप बच्चों को पढ़ने के लिए कहें। पाठ के आधार पर बच्चे अपने सुझाव मिलाएँ।

आप पुस्तक के चित्र 'आदर्श गाँव' की सहायता से स्पष्ट करें कि गाँव में स्कूल, डिस्पेंसरी, सहकारी समिति और पंचायत के बनाने से गाँव को किस प्रकार लाभ होता है।

सरकार गाँव की उन्नति में सहायता करती है इसकी सही जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को सामुदायिक विकास खंड के किसी अधिकारी से मिलाएँ और बच्चे स्वयं मालूम करें कि वे गाँव की उन्नति में किस प्रकार सहायता करते हैं।

यदि यह संभव न हो तो आप बच्चों को समीप के किसी गाँव में ले जाएँ और बच्चे गाँव के बड़े-बूढ़ों अथवा पंचायत के नेताओं से मिलकर मालूम करें कि पिछले लगभग २० वर्षों में गाँव में क्या-क्या परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों में सरकार ने क्या सहायता की है? गाँव वालों ने स्वयं सुधार के लिए क्या किया है?

इस पाठ की सफलता तब ही होगी जब बच्चे यह समझ लें कि गाँव केवल सरकार की सहायता से उन्नत नहीं हो सकते, स्वयं गाँव वालों को इसकी जिम्मेदारी सँभालनी होगी। यह समझाने के लिए आप निम्न प्रकार के उदाहरण दें।

सरकार देश में भाखड़ा जैसे अन्य बाँध बना रही है इनसे नहरें निकाल रही है परंतु जब तक गाँव वाले नहरों के पानी का उपयोग नहीं करेंगे खेतों की उपज कैसे बढेगी। सरकारी दवाखाने बीमारी

को दूर करने में सहायक हो सकते हैं परंतु इस सुविधा का लाभ उठाने की जिम्मेदारी गाँव वालों की है।

अन्य संभव क्रियाएँ

कक्षा के बच्चों को दो टोलियों में बाँटकर प्रत्येक टोली से गाँव का मॉडल बनवाएँ। एक टोली साधारण गाँव और दूसरी टोली आदर्श गाँव बनाए।

मूल्यांकन

पुस्तक में "अब बताओ" के नीचे दिए गए प्रश्न ४ को कराते समय आप निम्न प्रश्न करें :

(क) हमारे देश की कुल जनसंख्या कितनी है ?

(ख) हमारे देश के लोगों का मूल धंधा क्या है ?

(ग) खेती करने वाले लोग अधिकतर कहाँ रहते हैं ?

(घ) हमारे देश में गाँव अधिक हैं अथवा नगर ?

बच्चों के दैनिक व्यवहार में देखें कि उनके मन में गाँव वालों के प्रति सम्मान है। उनके मन में गाँव को सुधारने की लगन है।

खंड ३

भारत में यातायात और संचार

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे जानते हैं कि यातायात के विभिन्न साधनों द्वारा लोगों के आने-जाने और माल ढोने में सहायता मिलती है। इसी प्रकार संचार के विभिन्न साधनों द्वारा देश के सभी लोगों का पूरे देश से संपर्क बना रहता है। इस खंड में बच्चों को यह जानकारी करानी है कि उन्नत यातायात और संचार के साधन देश की प्रगति, रक्षा और राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने में किस प्रकार सहायता देते हैं। इस खंड के पाठों के अध्ययन से

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. देश में रेलों, सड़कों और हवाई मार्गों का जाल-सा बिछा हुआ है जिससे देश के सब भाग मिले हुए है।

२. यातायात के आधुनिक साधनों ने देश के सभी स्थानों को समीप कर दिया है।

३. यातायात के अच्छे साधनों से उद्योग और व्यापार को बढ़ावा मिल रहा है।

४. उन्नत संचार के साधनों से देश के सभी भागों मे रहने वाले लोगों का संपर्क एक-दूसरे-से बना रहता है।

५. संचार के अच्छे साधनों से देश-विदेश के ताज़ा समाचार मिलते रहते हैं।

६. यातायात और संचार के उन्नत साधनों से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीखेंगे :

१. भारत के मानचित्र का अध्ययन

२. सड़क के नियमों का पालन करना
३. रेलवे समय सारिणी का प्रयोग करना
४. टेलीफोन करना
५. तार लिखना
६. समाचार-पत्र पढ़ना

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. देश के विभिन्न भागों में एकता का भाव
२. देश के विभिन्न भागों में पारस्परिक निर्भरता का आभास

पढ़ाने के लिए सामान्य सुझाव

इस खंड मे बच्चों को यातायात और संचार के साधनों के विकास के इतिहास की जानकारी कराना आवश्यक नहीं है। आप केवल बच्चों को यह बताएँ कि देश के विभिन्न भाग विभिन्न यातायात के साधनों से जुडे हुए हैं और विभिन्न संचार साधन देश के सभी भागों में संपर्क बनाए रखते है। इसकी जानकारी कराने के लिए निम्न साधनों का प्रयोग करें :

१. बच्चे यातायात और संचार साधनों के चित्र एकत्र करें।
२. किसी सुदूर स्थान की यात्रा करने की समस्या कक्षा के समक्ष रखिए और रेल, सड़क और हवाई मार्ग मानचित्र की सहायता से बच्चों के सहयोग से यात्रा का प्रोग्राम बनाइए।

इस खंड के पाठों को वार्तालाप करके पढ़ाना आरंभ कीजिए। वार्तालाप के लिए प्रश्न निम्न प्रकार के हो सकते है :

—तुम अपने गाँव अथवा नगर से राज्य के दूसरे बड़े-बड़े नगरों तक कैसे आते जाते हो ?
—तुम्हें अपने नगर अथवा गाँव में देश भर के कारखानों में बनी चीजें कैसे प्राप्त होती हैं ?
—तुम्हारे नगर के कारखानों के लिए कच्चा माल कैसे आता है ?
—देश के विभिन्न भागों में होने वाली घटनाओं की जानकारी तुम्हें किस प्रकार होती है ?
—बच्चे प्रदर्शनी के लिए यातायात के नए व पुराने साधनों के चित्र एकत्र करें।

१०. हमारी सड़कें

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चों ने बड़े-बड़े नगरों में सड़को पर दौड़ते स्कूटर, मोटर, बस, ट्रक आदि देखे हैं। वे जानते

है कि सड़कों से हमें एक स्थान से दूसरे स्थान आने-जाने और माल ढोने में सहायता मिलती है। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से उन्हें यह बताना इस पाठ का उद्देश्य है कि सड़कों द्वारा देश के बड़े-बड़े नगर और गाँव जुड़े हुऐ हैं और देश में छोटी-बड़ी सड़कों का जाल-सा बिछा हुआ है। आज गाँव और शहरों के संबंध को बढ़ाने के लिए अधिकाधिक सड़कें बनाई जा रही है इससे देश की उन्नति और सुरक्षा में सहायता मिलेगी। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. सड़कों द्वारा देश के नगर और गाँव मिलाए जा रहे है।
२. सड़कों के विकास से कृषि, उद्योग और व्यापार बढ़ाने मे सहायता मिल रही है।
३. सड़कों के बनाने और इनके रख-रखाव मे लाखों लोग सहायता करते है।
४. सड़कों के उचित उपयोग के लिए सड़क के नियमों का पालन करना आवश्यक है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

आप बच्चों को पुस्तक में दिए मानचित्र की सहायता से बताएँ कि सड़कों द्वारा हमारे देश के सभी बड़े-बड़े नगर मिले हुए है। जो मार्ग विभिन्न राज्यों से होते हुए देश के एक कोने को दूसरे कोने से मिलाते हैं उन्हें राष्ट्र मार्ग कहते हैं और जो मार्ग एक ही राज्य के अंदर विभिन्न स्थानों को मिलाते है वे राज्य मार्ग कहलाते हैं। आप बच्चों से कहें कि वे पुस्तक में दिए मानचित्र में राष्ट्र मार्ग ढूंढें।

पुस्तक में दिए गए चित्र पर बच्चों से बातचीत करें और बताएँ कि आज पक्की सड़कें कैसे बनाई जाती है और विभिन्न मार्गों के रख-रखाव की जिम्मेदारी किस की है।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. सड़क पर चलने वाली पुरानी और नई सवारी गाड़ियों के चित्र इकट्ठे करे।
२. बच्चे नगर के स्थानीय बस स्टाप पर जाकर मालूम करें कि वहाँ से कहाँ-कहाँ के लिए बसें जाती हैं।
३. सड़कों पर प्रयोग में आने वाले संकेतों के बारे में बातचीत करें।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्न प्रश्न भी पूछिए :

१. भारत के रेखा मानचित्र में राष्ट्रीय मार्ग दिखाएँ।

२. फल अधिकतर ट्रकों द्वारा क्यों मँगाए जाते हैं ?

३. सड़क पर चलने वाली गाड़ियों को टैक्स क्यों देना पड़ता है ?

बच्चों के पाठशाला आने-जाने के समय आप निरीक्षण कीजिए कि बच्चे सड़क के नियमों का पालन करते है या नहीं। आप स्वयं भी इनका पालन कीजिए।

११. हमारी रेलें

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे जानते हैं कि रेल गाड़ियाँ लोगों को तथा सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने का काम करती हैं। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से इन्हें यह बताना इस पाठ का उद्देश्य है कि रेलें लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान लाने ले जाने के साथ-साथ देश के औद्योगिक और व्यापारिक विकास में भी सहायता करती हैं। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे

१. हमारे देश में बहुत-से रेल मार्ग हैं इनके द्वारा देश के विभिन्न भाग जुड़े हुए हैं।

२. रेलों की सुविधा के द्वारा देश के उद्योगों और व्यापार को बढ़ावा मिल रहा है।

३. रेलों को सुचारु रूप से चलाने के लिए लाखों लोग सहायता करते हैं।

४. रेलें राष्ट्र की संपत्ति है इनकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

यहाँ आपको रेलों के विकास का इतिहास बताने की आवश्यकता नहीं है। केवल बच्चों को यह जानकारी कराएँ कि हमारे देश का कोई ऐसा भाग नही है जो एक-दूसरे-से मिला न हो ।

आपकी कक्षा में ऐसे बालक भी होंगे जिन्होंने रेल की यात्रा की हो, उनके अनुभव का लाभ अवश्य उठाएँ। उनसे कहे कि वह अपनी रेल यात्रा का वर्णन कक्षा में सुनाएँ। यात्रा का मार्ग पुस्तक में दिए मानचित्र में दिखाएँ और इसकी सहायता से आप अन्य मार्गों की जानकारी कराएँ।

यदि यह संभव नहीं हो तो आप बच्चों को दिल्ली से मद्रास, कलकत्ता, बंबई जैसे मार्ग ढूँढने के लिए कहें। बच्चे भारत की राजधानी दिल्ली से बड़े-बड़े नगरों की दूरी मानचित्र के पैमाने की सहायता से नापें।

रेलें हमारी क्या सेवाएँ करती हैं इसकी जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को पाठ पढ़ने के

लिए कहें। जब बच्चे पाठ पढ़ चुकें तो आप प्रश्नों द्वारा उनकी जानकारी को दोहराएँ।

पुस्तक में दिए मालगाड़ी के चित्र पर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें और मालूम करें कि यह सवारी गाड़ी से किस प्रकार भिन्न है ? इसके डिब्बे सवारी गाड़ी जैसे क्यों नहीं बनाए जाते ?

पुस्तक में दिए गए डीलक्स कोच के चित्र की सहायता से रेलगाड़ी में किए गए सुधारों के विषय में बातचीत करें। यदि संभव हो तो बच्चों को स्टेशन ले जाकर कुछ नई गाड़ियाँ भी दिखाएँ।

रेलगाड़ी में यात्रा करते समय गाड़ी को साफ और ठीक रखने में प्रत्येक यात्री का क्या उत्तरदायित्व है, बातचीत द्वारा स्पष्ट करें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे रेलवे स्टेशन जाएँ और स्टेशन मास्टर से मिलकर मालूम करें कि रेलों को सुचारु रूप से चलाने में कौन-कौन सहायता करता है। इस प्रकार रेल संबंधी कार्यकर्त्ताओं की सूची बनाएँ।

२. विभिन्न प्रकार के काम में आने वाले इंजनों के फोटो इकट्ठे करें।

३. अपने अध्यापक की सहायता से रेलवे समय सारिणी देखना सीखें।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्नों पर बातचीत करें। बच्चों के उत्तर से आप समझ पाएँगे कि उनमें सही ज्ञान अथवा भाव उत्पन्न हो रहे है या नहीं ?

१. भारी माल ट्रक की अपेक्षा रेलों द्वारा कम खर्च पर भेजा जाता है। क्या तुम बता सकते हो ऐसा क्यों है ?

२. एक लड़के ने रेल द्वारा बंबई से दिल्ली तक बिना टिकट यात्रा की। वह दिल्ली के स्टेशन पर पकड़ लिया गया। रेल के अधिकारियों ने उस पर जुर्माना किया। क्या तुम्हारी राय में जुर्माना करना उचित है ? यदि हाँ तो क्यों ?

३. यदि तुम किसी व्यक्ति को रेलवे लाइन उखाड़ते देखो तो तुम क्या करोगे ?

१२. हमारे हवाई मार्ग

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

आकाश में उड़ता हवाई जहाज़ बच्चों ने देखा है और वे जानते हैं कि हवाई जहाज़ हवाई अड्डों

से विभिन्न स्थानों को आते-जाते है। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से उन्हें यह बताना इस पाठ का उद्देश्य है कि हवाई जहाज यातायात का एक बहुत तेज परंतु महँगा साधन है। इसके द्वारा देश के बड़े-बड़े नगर जुडे हुए हैं। इसके साथ ही यह देश की सुरक्षा के लिए बहुत आवश्यक है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हवाई मार्ग द्वारा देश के बड़े-बड़े नगर जुड़े हुए हैं।
२. हवाई जहाज़ यातायात का एक महत्त्वपूर्ण परंतु महँगा साधन है।
३. हवाई जहाज़ द्वारा यात्रा करने में समय बहुत कम लगता है।
४. हवाई जहाज देश की सुरक्षा के लिए बहुत आवश्यक है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चे जानते हैं कि हवाई अड्डों से विभिन्न स्थानों को हवाई जहाज़ जाते हैं। उनकी इस जानकारी का लाभ उठाएँ और बच्चों से उन स्थानों के नाम बताने को कहें जहाँ हवाई जहाज़ जाते हैं। पुस्तक में पृष्ठ ६५ पर दिए मानचित्र की सहायता से आप बच्चों को भारत की राजधानी दिल्ली का देश के बड़े-बड़े नगरों से संबंध बताएँ। इन हवाई मार्गों की दूरी बच्चे मानचित्र में दिए पैमाने की सहायता से मालूम करें।

पुस्तक में यह पाठ एक हवाई यात्रा की कहानी के रूप में दिया गया है। यह कहानी बच्चों को रुचिकर लगेगी अतः बच्चे इसे पढ़ें। पुस्तक में दिए गए चित्रों पर बच्चों से बातचीत करें और बताएँ कि हवाई यात्रा में क्या-क्या सुविधाएँ हैं। यदि संभव हो तो बच्चों को हवाई अड्डे ले जाकर हवाई जहाज़ अंदर से दिखाएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे हवाई जहाज़ के चित्र इकट्ठे करें।
२. बच्चे आवश्यक जानकारी प्राप्त करके निम्नलिखित चार्ट में भरें :

	दूरी	कितना समय लगेगा		
		बस से	रेल से	हवाई जहाज से
दिल्ली से मद्रास				
दिल्ली से बंबई				
दिल्ली से कलकत्ता				
दिल्ली से श्रीनगर				
दिल्ली से जोधपुर				
दिल्ली से गौहाटी				
दिल्ली से त्रिवेंद्रम				
दिल्ली से पोर्ट ब्लेयर				

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्न प्रश्न भी कीजिए :

१. बंबई, कलकत्ता, मद्रास जैसे बड़े-बड़े नगरों से रेलें दिल्ली २४ घंटे से अधिक समय में पहुँचती हैं परंतु हमारे मित्र, सगे-संबंधी शाम को पत्र डालते हैं और हमें अगले दिन ही मिल जाते हैं। यह कैसे संभव होता है ?

२. तुम्हारा एक मित्र गौहाटी में बीमार है, तुम उसके पास तुरंत दवा भेजना चाहते हो बताओ यातायात का कौन-सा साधन काम मे लाओगे ?

१३. संचार के साधन

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे अपने गाँव अथवा नगर के गली, मोहल्ले आदि मे डाकिए को देखते हैं। वे जानते हैं कि

डाकिया दूर रहने वाले मित्रों और संबंधियों के समाचार लाता है। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से यह बताना इस पाठ का उद्देश्य है कि समाचार लाने ले जाने का कार्य डाक-तार विभाग करता है। आधुनिक और उन्नत संचार साधनों से देश के सभी भागों में रहने वाले लोगों में संपर्क बनाए रखने में सहायता मिलती है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है। इतना ही नहीं इससे देश की सुरक्षा में भी सहायता मिलती है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. संचार के साधनों द्वारा दूर रहने वाले लोगों से संबंध बना रहता है।
२. शीघ्र संदेश भेजने वाले साधनों से दूर स्थानों में होने वाली घटनाओं की जानकारी बहुत कम समय में हो जाती है।
३. संचार के अच्छे साधनों द्वारा व्यापार को बढ़ावा मिल रहा है।
४. संचार सुविधाएँ डाक-तार विभाग द्वारा प्राप्त होती हैं।
५. संचार के आधुनिक साधनों द्वारा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चे जानते हैं कि डाक द्वारा मित्रों और संबंधियों के समाचार आते-जाते है। उनकी इस जानकारी की सहायता से बातचीत द्वारा यह बताएँ कि डाकघर हमारी क्या सेवाएँ करता है। इस बातचीत में बच्चे कुछ सेवाएँ बताएँगे आप इन्हें श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ। अब आप बच्चों से पाठ पढ़ने को कहें। जब बच्चे पाठ पढ़ लें तो आप प्रत्येक सेवा को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें। यहाँ आप यह बताना न भूलें कि पत्र पर पता पूरा और साफ-साफ लिखना चाहिए। कुछ पते आप श्यामपट्ट पर भी लिखकर बताएँ।

यदि संभव हो तो आप बच्चों को समीप का डाकघर दिखाने भी ले जाएँ।

बच्चे जान गए हैं कि डाक द्वारा पत्र एक स्थान से दूसरे स्थान भेजे जाते हैं। उनकी इस जानकारी की सहायता और बातचीत द्वारा शीघ्र संदेश भेजने वाले साधनों की जानकारी कराएँ। इस बातचीत में आप यह ध्यान अवश्य रखें कि बच्चे संचार के विभिन्न साधनों में अंतर समझ गए हैं जिससे समय पड़ने पर उसका उचित प्रयोग कर सकें।

बच्चों ने संचार के उन साधनों के विषय में पढ़ लिया है जिनके द्वारा एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से संबंध बनता है। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से अब यह बताएँ कि समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन द्वारा देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों में संपर्क बनता है। देश के किसी भी भाग में कोई घटना होती है उसकी जानकारी बहुत कम समय मे एक साथ सभी जगह हो जाती है।

इन साधनों द्वारा हमें क्या लाभ होता है इसकी जानकारी के लिए आप बच्चों से पाठ पढ़ने के लिए कहें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे डाकघर जाकर देखें कि तार किस प्रकार भेजे जाते है।
२. पत्रों पर सही प्रकार से पता लिखना और मनीआर्डर फार्म भरना सीखें।
३. टेलीफोन का प्रयोग करना सीखें।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्न भी करें :

१. तुम अपने मित्र को १०० रु० भेजना चाहते हो, बताओ तुम डाकघर की कौन-सी सेवा का उपयोग करोगे ?
२. नीचे एक कालम में कुछ कथन दिए गए हैं। प्रत्येक कथन के सामने उस संचार साधन का नाम लिखो जिसका तुम प्रत्येक स्थिति में प्रयोग करना उचित समझते हो।

कथन	संचार साधन
१. यदि तुम दिल्ली से अपने मित्र को बंबई १००) रु० भेजना चाहते हो।	
२. यदि तुम स्टेशन से रेलगाड़ी के जाने का समय मालूम करना चाहते हो।	
३. यदि तुम १५ अगस्त को प्रधान मंत्री का भाषण घर बैठकर सुनना चाहते हो।	
४. मानलो तुम्हारा कोई मित्र मद्रास में रहता है। उसने तुम्हें विवाह में शामिल होने के लिए बुलाया है। परंतु अचानक ऐसी परिस्थिति आ गई कि तुम विवाह में भाग नहीं ले सकते। ऐसी दशा मे तुम किस प्रकार अपनी बधाई का संदेश भेजोगे ?	

खंड ४

हम सब भारतवासी हैं

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चों ने देश की भूमि और यहाँ के रहने वालों के जीवन के बारे में पढ़ लिया है। वे जान गए हैं कि देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों का खाना-पीना, रहन-सहन, भाषा और धर्म अलग-अलग है फिर भी वे सब आपस में प्रेम से रहते है। इस खंड के पाठों में बच्चे पढ़ेगे कि किस प्रकार हम सबने मिलकर स्वतंत्रता प्राप्त ,की अपना संविधान बनाया, देश में अपना शासन आरंभ किया और आज वे कौन-सी चीज़ें हैं जो हम सब को एकता के सूत्र में बाँधे हुए है। इस खंड के पाठों के अध्ययन से

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमें आज़ादी एक लबे संघर्ष के बाद मिली है।

२. आज़ादी प्राप्त करने के लिए देश के विभिन्न भागों और सभी धर्मों के अनेक लोगों ने अपना जीवन बलिदान किया है।

३. भारतीय संविधान के अनुसार देश में गणतंत्र राज्य है और समस्त सत्ता जनता के हाथ में है।

४. शासन की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई संसद है।

५. देश के शासन की बागडोर जनता द्वारा चुने हुए लोगों के हाथ में है।

६. संविधान ने हमें कुछ अधिकार दिए हैं, लेकिन उनके साथ-साथ हमारे कर्तव्य भी हैं।

७. हम सब मिलकर अपने राष्ट्रीय त्योहार मनाते हैं।

८. हम सब अपने राष्ट्र के प्रतीकों का सम्मान करते है।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. मतदान में भाग लेना
२. सभा आदि में भाग लेना
३. राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का उचित प्रयोग करना
४. राष्ट्रीय त्यौहारों में भाग लेना

(ग) निम्नलिखित भाव बच्चों में जाग्रत होंगे :

१. राष्ट्र के प्रतीकों के प्रति आदर और सम्मान
२. धार्मिक सहनशीलता और असांप्रदायिक दृष्टिकोण
३. राष्ट्रीय एकता
४. राष्ट्र की स्वतंत्रता को बनाए रखने के प्रति कर्तव्यनिष्ठा

पढ़ाने के लिए सामान्य सुझाव

१. इस खंड के पाठों को पढ़ाते समय यह आवश्यक नहीं कि आप पुस्तक मे दिए क्रम का पालन करें। अपनी सुविधानुसार इसमें फेर-बदल कर सकते है।
२. देश की आजादी की एक लंबी कहानी है। इस पर आप एक छोटा-सा प्रोजैक्ट चलाएँ। उसमें बच्चे निम्न कार्य कर सकते है :
—नेताओं के चित्र एकत्र करना
—कुछ खास-खास घटनाओं और स्थानों को भारत के मानचित्र में भरना
३. १४ अगस्त १९४७ की रात को १२ बजे जवाहरलाल नेहरू ने भारत के प्रधान मंत्री पद की शपथ ली थी। उस समय उन्होंने भाषण दिया था, उस भाषण को भीत-पत्र पर लगाएँ।
४. संविधान में दी गई प्रस्तावना को याद करें।
५. संविधान में दिए गए अधिकार और कर्तव्यों का चार्ट बनाएँ।
६. १९३० के कांग्रेस अधिवेशन का अभिनय करें।
७. बाल सभा में स्वतंत्रता दिवस मनाएँ।

१४. हमारी आजादी की कहानी

कक्षा तीन में बच्चों ने पढ़ा है कि हम राष्ट्रीय त्यौहार मनाते हैं। बच्चों की इस जानकारी की

सहायता से उन्हें यह बताना है कि यह आजादी हमें अनेक बलिदानों और लंबे संघर्ष के परिणाम स्वरूप मिली है। इस आजादी की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे

१. अनेक देशवासियों ने आजादी प्राप्त करने के लिए अपने जीवन का बलिदान किया।

२. देश के विभिन्न भागों के और सभी धर्मों के अनेक लोगों ने लड़ाई में भाग लिया था।

३. अनेक वलिदानो से प्राप्त आजादी की रक्षा करना हम सब का कर्तव्य है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

आप इस पाठ को स्वतंत्रता दिवस के बाद पढ़ाएँ। स्वतंत्रता दिवस पाठशाला मे मनाया ही जाता होगा। इस अवसर पर बच्चे वाल सभा करें जिसमें—

—आज़ादी से संबंधित कविताएँ सुनाएँ

—आज़ादी की कहानी सुनाएँ

—आज़ादी के लिए शहीद हुए नेताओं की जीवनियाँ सुनाएँ

आप बच्चों को बातचीत द्वारा बताएँ कि स्वतंत्रता दिवस क्यों मनाया जाता है। आज़ादी प्राप्त करने के लिए हमें कितनी यातनाएँ सहनी पड़ीं और जीवन बलिदान करने पड़ें। यह जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को पुस्तक मे से पाठ पढने के लिए कहे।

जब बच्चे पाठ पढ़ लें तो आप बच्चों से आज़ादी की कहानी पर बातचीत करें और स्पष्ट करें कि—

—१८५७ में निजी अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया।

—भारतवासियों की माँग को अंग्रेजों के सामने रखने के लिए कांग्रेस की स्थापना की।

—कांग्रेस की स्थापना में कुछ उदार अंग्रेज भी शामिल थे।

—कांग्रेस द्वारा स्वराज्य की माँग करना।

—लोकमान्य तिलक, गांधी जी द्वारा जनता में आज़ादी के प्रति जोश भरना।

—लाठी, गोली और कठोर कानूनों के प्रयोग से अंग्रेजों का विरोध बढ़ता गया।

—कांग्रेस के प्रति जनता का सहयोग।

—आज़ादी की लड़ाई में अनेक देशवासियों ने अपने जीवन का बलिदान किया। यह आप उदाहरण द्वारा बताएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे निम्नलिखित महापुरुषों के जीवन के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करें :
रानी लक्ष्मी बाई, दादा भाई नौरोजी, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, सरदार पटेल, सुभाष चंद्र बोस, राजेन्द्र प्रसाद, सत्यमूर्ति, सरोजिनी नायडू, सरदार भगतसिंह, चंद्र-शेखर आज़ाद।

२. पुस्तक मे बताए नेताओं के जन्म स्थानों के नाम बच्चे भारत के मानचित्र मे लिखें।

३. बच्चे स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित कविताएँ याद करें।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्न प्रश्न भी कीजिए :

१. नीचे एक कालम में आज़ादी की लड़ाई से संबंधित व्यक्तियों के नाम दिए गए हैं। दूसरे कालम में कुछ कथन हैं। प्रत्येक कथन किसी-न-किसी व्यक्ति से संबंधित है। प्रत्येक व्यक्ति के नाम के सामने उससे संबधित कथन लिखे :

ताँत्या टोपे	कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के सभापति थे।
ए० ओ० ह्यूम	१८५७ के आंदोलन का एक नेता था।
गाँधी जी	स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।
लोकमान्य तिलक	कांग्रेस के जन्मदाता कहलाते हैं।
जवाहरलाल नेहरू	भारत छोड़ो का नारा लगाया।

२. अंग्रेजों ने आज़ादी की लड़ाई को दबाने के लिए लाठी, गोली और कठोर कानूनों का प्रयोग किया परंतु आंदोलन बढ़ता गया। ऐसा क्यों होता था ?

१५. हमारा संविधान

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पिछले पाठ में बच्चों ने पढ़ा है कि एक लबे संघर्ष के वाद १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता मिलने पर एक नई प्रकार की शासन प्रणाली अपनाई, देश के शासन के लिए नियम बनाए और अपने अधिकार और कर्तव्य निश्चित किए। इन्ही बातों की जानकारी कराना इस पाठ का उद्देश्य है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमारे स्वतंत्र भारत का एक सविधान है।
२ संविधान के अनुसार हमारे यहाँ शासन की लोकतंत्र प्रणाली है।
३. हमारे देश मे समस्त सत्ता जनता के हाथ में है।
४. शासन का सर्वोच्च अधिकारी राष्ट्रपति कहलाता है।
५. हमारी स्थल, जल और वायुसेना राष्ट्रपति के अधीन है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ का विषय ९ वर्ष के बच्चों के लिए निसंदेह कठिन है। अतः अध्यापकों से निवेदन है कि वे 'संविधान' के संबंध में अधिक गहराई में जानने का प्रयत्न न करें। इस स्तर पर बच्चों को विषय का साधारण-सा ज्ञान देना ही काफी होगा। बच्चों से निम्न प्रकार के प्रश्नों पर बातचीत करे और भारत के सविधान की जानकारी कराएँ :

—राज्य का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता है ?
—राज्यपाल की नियुक्ति कौन करता है ?
—विधान सभा में क्या कार्य होता है ?
—विधान सभा के सदस्यों को कौन चुनता है ?
—चुनाव का अधिकार जनता को कैसे प्राप्त हुआ ?

अब आप बच्चों को पुस्तक के पाठ में से संविधान की प्रस्तावना पढ़ने को कहें। जब बच्चे प्रस्तावना पढ़ लें तो आप बातचीत द्वारा स्पष्ट करें कि भारत की शासन-प्रणाली को लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली क्यों कहा जाता है।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे संविधान में दी गई प्रस्तावना को सुंदर अक्षरों में लिखकर कक्षा में लगाएँ और याद करें।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्न प्रश्न भी करें :

१. ऐसी दो बातें बताओ जिससे यह मालूम होता हो कि हमारे देश में जनता का राज्य है।

२. भारतीय सविधान देश में किस दिन लागू किया गया ?

३. ऐसी कोई दो बाते बताओ जिन पर भारतीय संविधान मे बल दिया गया है।

१६. हमारी संघीय सरकार

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पिछले पाठ में बच्चों ने पढ़ा है कि हमारा देश स्वतंत्र है। हमारा एक संविधान है और देश का सारा शासन लोकतंत्र प्रणाली से होता है। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह जानकारी कराना है कि देश मे शासन की समस्त सत्ता किसके हाथ में है। देश के लिए कौन कानून बनाता है और केंद्र में शासन का सारा कार्य कौन करता है ? इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. भारतीय ससद देश के लिए नियम बनाती है।

२. भारत का राष्ट्रपति लोकसभा और राज्यसभा संसद के अंग है।

३. लोकसभा के सदस्य जनता द्वारा चुने जाते हैं।

४. राष्ट्रपति का चुनाव लोकसभा, राज्यसभा और राज्यों की विधान सभा के चुने हुए सदस्य करते है।

५. बहुमत दल का नेता प्रधान मत्री बनता है।

६. बहुमत दल के हाथ समस्त शासन की बागडोर होती है।

७. देश का सबसे बड़ा न्यायालय सर्वोच्च न्यायालय कहलाता है।

८. सर्वोच्च न्यायालय अपने कार्य मे स्वतंत्र है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

संघीय शासन (केंद्रीय शासन) व्यवस्था पढ़ाने के लिए आप एक बड़ा-सा चार्ट बनाएँ। बच्चे बारी-बारी से पाठ्यपुस्तक में से संबंधित भाग पढ़ते जाएँ और आप चार्ट के आधार पर बातचीत करके निम्न जानकारी स्पष्ट करे :

—कानून बनाने वाली सभा के कार्य

—न्याय पालिका के कार्य

—कार्य पालिका के कार्य

—मंत्रिमंडल और प्रधान मंत्री की नियुक्ति
—कार्य पालिका का संसद से संबंध
—राज्यसभा के सदस्यों की नियुक्ति और कार्य
—राष्ट्रपति का निर्वाचन और उसके अधिकार

अन्य संभव क्रियाएँ

१. पाठशाला मे कृत्रिम (MOCK) पार्लियामेंट की बैठक कराएँ
२. केंद्रीय सरकार के कार्यों की सूची बनाएँ
३. केंद्रीय मंत्रिमडल के सदस्यों के नाम मालूम करे

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रश्न भी करें :

१. मंत्रिमंडल देश के शासन का सारा कार्य करता है फिर भी वह मनमानी नहीं कर सकता है। ऐसा क्यों है ?
२. लोकसभा के सदस्यों का चुनाव करते समय योग्य व्यक्तियों को क्यों चुनना चाहिए ?
३. हमारे देश में प्रत्येक भारतवासी को प्रधान मंत्री बनने का अवसर प्राप्त है। यदि हाँ, तो कैसे ?

पाठशाला में कृत्रिम पार्लियामेंट के लिए वे सब क्रियाएँ कराएँ जो पार्लियामेंट बनाने के लिए आवश्यक हैं। इन सब क्रियाओं की जिम्मेदारी आप बच्चों को सौंपे और आप देखें कि वच्चे पाठ में पढ़ी बातें व्यवहार मे लाते हैं।

१७. हमारे अधिकार और कर्तव्य

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पिछले पाठ 'हमारा संविधान' में बच्चों ने पढा है कि स्वतंत्रता मिलते ही हमने अपना संविधान बनाया था। इसमें शासन का ढंग, जनता के अधिकार और कर्तव्य निश्चित किए थे। बच्चों की इस जानकारी की सहायता से उन्हें अपने मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी कराना इस पाठ का उद्देश्य है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. संविधान द्वारा हमें मौलिक अधिकार दिए गए है ।

२. हमे अपने अधिकारों के प्रयोग की पूर्ण स्वतंत्रता है । लेकिन उनका प्रयोग हम वहीं तक कर सकते हैं जहाँ तक दूसरों के अधिकारों में कोई रुकावट नहीं आती ।

३. कर्तव्यों का पालन उतना ही आवश्यक है जितना कि अधिकारों का प्रयोग ।

४. अधिकारों और कर्तव्यों के पालन से जीवन सुखी बनता है ।

५. हमारे अधिकारों की रक्षा न्याय पालिका करती है ।

६. कर्त्तव्यों और अधिकारों मे परस्पर घनिष्ठ संबंध है ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चों की जानकारी के आधार पर आप निम्न प्रश्न करें :

—विधान सभा के सदस्यों को कौन चुनता है ?

—चुनाव किस प्रकार किया जाता है ?

—वोट डालने का अधिकार लोगों को किसने दिया है ?

बच्चे इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देंगे उनके उत्तर की सहायता से आप बताएँ कि यह अधिकार हमे हमारे संविधान द्वारा मिला है। ऐसे ही अनेक अधिकार हमें संविधान द्वारा मिले है। इन अधिकारों की जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को पाठ पढ़ने के लिए कहें ।

पुस्तक में दिए अस्पताल के चित्र पर बच्चों से निम्न प्रश्न करें :

—अस्पताल में लोग किस लिए जाते है ?

—अस्पताल से दवा प्राप्त करने का अधिकार किसे है ?

—अस्पताल में दवा और डाक्टरों के वेतन पर खर्च होने वाला धन कहाँ से आता है ?

इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर से आप बच्चों को समझाएँ कि अधिकारों के साथ कर्त्तव्य भी होते हैं। अब आप बच्चों से पूछें कि संविधान में दिए मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिए किन-किन कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। बच्चे कुछ कर्तव्य बताएँगे। इन्हें आप श्यामपट्ट पर लिखते जाएँ और इनके द्वारा संविधान में दिए कर्त्तव्यों की जानकारी कराएँ ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे अधिकारों और कर्तव्यों का चार्ट बनाएँ और अपनी कक्षा में लगाएँ ।

२. निम्नलिखित विषय पर बच्चों से वाद-विवाद प्रतियोगिता कराएँ :
कर्तव्यों का पालन किए बिना हम अपने अधिकारों का लाभ नहीं उठा सकते है।

मूल्यांकन

१. मोहन दिल्ली से आगरा जाना चाहता था। वह स्टेशन गया और रेल में बैठ गया। मार्ग में उसे रेलवे अधिकारी ने पकड़ लिया और पूछा कि उसने टिकट क्यों नहीं लिया। मोहन ने उत्तर दिया कि वह टैक्स देता है इसलिए वह बिना टिकट यात्रा कर रहा है। क्या मोहन का उत्तर उचित है। यदि नहीं, तो क्यों ?
२. रामू सड़क पर चारपाई बिछा कर सोता है। सभी लोग उसे सड़क पर चारपाई बिछाने को मना करते है। वह सबसे लड़ता है और कहता है कि वह अपने व्यवहार मे स्वतंत्र है, वह जो चाहे सो करे। क्या रामू का उत्तर उचित है ? यदि नहीं, तो क्यों ?
३. आप बच्चों के व्यवहार मे देखें कि क्या वे अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं।
आप बच्चों के व्यवहार में देखें कि वे अपने अधिकार का प्रयोग करते समय दूसरों के अधिकार में बाधा तो नहीं डालते।

१८. हमारे राष्ट्रीय त्यौहार

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे देश के विभिन्न राज्यों के संबंध में पढ चुके हैं और जानते हैं कि सब ही राज्यों में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि त्यौहार सब लोग मिलकर मनाते हैं। इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को यह जानकारी कराना है कि इन त्यौहारों को हम क्यों मनाते है और कैसे मनाते हैं ? इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. राष्ट्रीय त्यौहार देश के सब भागों मे मनाए जाते हैं।
२. राष्ट्रीय त्यौहारो में सभी धर्मों और वर्गों के लोग भाग लेते हैं।
३. राष्ट्रीय त्यौहार देश के उन लोगों की याद दिलाते हैं जिन्होंने अपना जीवन देश की आजादी के लिए बलिदान किया था।
४. राष्ट्रीय त्यौहार हम सब देशवासियों में एकता का भाव उत्पन्न करते है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

पाठशाला में स्वतंत्रता दिवस मनाया ही जाता है। बच्चे इस समारोह में भाग लेते हैं। अतः इस संबध में आप बच्चों से बातचीत करें। बातचीत करते समय इस बात का ध्यान रखे कि बच्चे निम्न बाते अवश्य जान लें :

—स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है ?

—स्वतंत्रता दिवस क्यों मनाया जाता है ?

—दिल्ली मे स्वतंत्रता दिवस किस प्रकार मनाया जाता है ? इसकी जानकारी कराने के लिए पुस्तक मे दिए चित्र पर बातचीत करें और पुस्तक में दिया गया पाठ पढ़ने को कहें।

यहाँ आप प्रधान मंत्रियों के भाषणों मे से कुछ के सरल वाक्य चुनकर बच्चों के सामने रखिए जिससे कि उन्हें इसका महत्त्व मालूम हो सके।

गणतंत्र दिवस पढ़ाने के लिए आप बच्चों से पुस्तक में दिए चित्र पर बातचीत करें और बताएँ कि यह समारोह क्यों मनाया जाता है।

पुस्तक में विशेषरूप से बताया गया है कि दिल्ली में गणतंत्र दिवस समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। आप बच्चों को यह विवरण पढ़ने के लिए कहें। जब बच्चे पाठ पढ़ चुके तो आप बच्चों को वार्तालाप द्वारा निम्न जानकारी अवश्य कराएँ :

—स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस में क्या अंतर है ?

—ये दोनों समारोह दो अलग-अलग दिन क्यों मनाए जाते हैं ?

आप बच्चों को कहें कि वे राष्ट्रपति के भाषण पुराने अखबारों, पत्रिका आदि में से एकत्र करें, भीत-पत्र पर लगाएँ। इनमें से कुछ याद करके अपने स्कूल मे मनाए जाने वाले गणतत्र दिवस समारोह में सुनाएँ।

गांधी जयंती पढ़ाने के लिए आप बातचीत द्वारा बच्चों को बताएँ कि गांधी जी में ऐसे क्या गुण थे कि हम उनकी जयंती मनाते हैं। जब बच्चे गांधी जी के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त कर ले तो आप बच्चों को पाठ पढ़ने के लिए कहें।

बच्चे गांधी जी के जीवन की कुछ घटनाएँ दूसरी पुस्तकों से भी पढ़ें और गांधी जयंती के अवसर पर पाठशाला में सुनाएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे राष्ट्रीय त्यौहारों से संबधित पुराने चित्र इकट्ठे करें।

२. स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस पर रेडियो से प्रसारित देश के नेताओं द्वारा दिए गए भाषण सुनें ।

३. अपनी पाठशाला में राष्ट्रीय त्यौहार मनाने का आयोजन करें और बच्चे निम्न प्रकार के कार्यक्रम का उत्तरदायित्व ले :

—स्कूल को सजाना

—अतिथियों के बैठने का प्रबंध करना

—समारोह मे भाग लेना

—कविता, भाषण इत्यादि पढ़ना

—राष्ट्रीय गान में भाग लेना

—राष्ट्रीय झंडा फहराना

—गांधी जयंती के अवसर पर सामुदायिक सफ़ाई अथवा समाज सेवा में भाग लेना ।

मूल्यांकन

राष्ट्रीय त्यौहारों का उद्देश्य बच्चों में देश के प्रति प्रेम और एकता का भाव जाग्रत करना है। अत: आप बच्चों को अधिक-से-अधिक अवसर दें कि वे मिलकर कार्य करें और त्यौहार मनाएँ। ऐसे अव-सरों पर आप विशेष रूप से देखें कि बच्चों के व्यवहार में देश-प्रेम और एकता का भाव आया है अथवा नहीं। स्कूल में राष्ट्रीय त्यौहार मनाने के अवसर पर बच्चों के निम्न प्रकार के व्यवहार का निरीक्षण करें :

—राष्ट्रीय गान गाते समय खड़े होने की अवस्था

—राष्ट्रीय झंडे के प्रति सम्मान

—मिलकर काम करना

—उत्तरदायित्व का पालन करना

१९. हमारे राष्ट्र के प्रतीक

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पिछले पाठ में बच्चों ने पढ़ा है कि राष्ट्रीय त्यौहार मनाते समय वे झंडा फहराते है, राष्ट्रीय गान गाते हैं। उनकी इस जानकारी की सहायता से उन्हें राष्ट्र के प्रतीकों की जानकारी कराना इस पाठ का उद्देश्य है। इस पाठ के अध्ययन से

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. राष्ट्र चिह्न हमारे देश की स्वतत्रता के प्रतीक है।
२. राष्ट्र चिह्न हमे एकता के सूत्र में बाँधे हुए है।
३. राष्ट्र चिह्न हमारे देश के आदर्शों की याद दिलाते है।
४. राष्ट्र चिह्नों का हम सब आदर करते है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ को आप राष्ट्रीय त्यौहारों को पढ़ाने के साथ-साथ ही पढ़ाएँ क्योंकि इन प्रतीकों का प्रयोग त्यौहारों में होता है।

आप राष्ट्रीय झंडा अपनी पाठशाला में फहराएँ और इस समय बच्चों को झंडा फहराने के नियमों की जानकारी कराएँ और उन्हें स्पष्ट रूप से बताएँ कि झंडा फहराते समय इन नियमों का पालन हमें अवश्य करना चाहिए तभी हम अपने राष्ट्रीय झंडे का सम्मान कर सकते हैं।

राष्ट्रीय ध्वज बच्चों को दिखाएँ और इसकी बनावट तथा रंगों का महत्त्व बताएँ। कांग्रेस का झंडा यदि प्राप्त हो सके तो बच्चों को दिखाएँ। राष्ट्रीय झंडे और कांग्रेस के झंडे में अंतर स्पष्ट करें तथा बताएँ कि राष्ट्रीय झंडे में चक्र क्यों रखा गया है और यह कहाँ से लिया गया है।

राष्ट्रीय गान पढ़ाते समय आप बच्चों को इसका मूल अर्थ बताएँ। प्रत्येक शब्द और पंक्ति का अर्थ बताना आवश्यक नहीं है।

पाठशाला में राष्ट्रीय गान गाने का अधिकाधिक अवसर दें जिससे बच्चे इसे याद कर सकें और सही अवस्था में खड़े होकर ठीक धुन से गाना सीख सकें।

राष्ट्रीय गान कब अपनाया गया और इसे किसने लिखा इसकी जानकारी कराने के लिए आप बच्चों से पाठ पढ़ने के लिए कहें।

राष्ट्रीय चिह्न की जानकारी कराने के लिए आप बच्चो से पुस्तक में दिए चित्र का वर्णन पढ़ने को कहें। दिए गए वर्णन पर आप बच्चों से बातचीत करें और स्पष्ट करें कि

—यह चिह्न कहाँ से लिया गया है ?

—इसमें चार शेर हैं परंतु चित्र में तीन शेर तीन ओर मुँह किए हुए दिखाई देते हैं।

—शेरों के नीचे चक्र बना है।

—चक्र के एक ओर घोड़ा और दूसरी ओर बैल है।

राष्ट्रीय चिह्न पढ़ाने का उद्देश्य मुख्य रूप में इसके प्रयोग की जानकारी कराना है। बच्चे विभिन्न

सरकारी कागजों और पुस्तकों पर छपे चिह्न को पहचानें और आप बातचीत द्वारा बच्चों को बताएँ कि इस चिह्न का प्रयोग किन-किन स्थानों पर किया जाता है।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. बच्चे राष्ट्रीय झंडा फहराने के नियम एक बड़े से कागज पर सुंदर अक्षरों में लिखें और कक्षा में लगाएँ।

२. बच्चे राष्ट्रीय झंडा बनाएँ।

ब'३च्चे राष्ट्रीय गान याद करें।

मूल्यांकन

१. अपनी पाठशाला में राष्ट्रीय गान गाने का अधिकाधिक अवसर निकालें और आप देखें कि बच्चे सही अवस्था में खड़े होकर इसे ठीक ढंग से गाते हैं।

२. पाठशाला में झंडा फहराते समय देखें कि बच्चे पढ़े हुए नियमों का पालन ठीक-ठीक करते हैं।

३. राष्ट्रीय चिह्न जिन-जिन चीजों पर छपा हो आप बच्चों से पहचानने के लिए कहें।

खंड ५

भारत के इतिहास की कहानियाँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

कक्षा तीन में बच्चों ने रामायण, महाभारत, सम्राट अशोक, आदि की कहानियाँ पढ़ी हैं। ये कहानियाँ हमारे इतिहास की हैं। इनके द्वारा हमारी परपराओं और मान्यताओं की जानकारी बच्चों ने प्राप्त की है। उनकी इस जानकारी को और भी स्पष्ट करने के लिए इस पुस्तक में इतिहास की कहानियों के क्रम को आगे बढ़ाया जाएगा और

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमारी परपराओं और मान्यताओं को बनाने में कई सांस्कृतिक धाराओ ने योग दिया है।

२. हमारे महानपुरुषों ने देश की परंपराओं और सभ्यता के विकास के लिए कठिन श्रम किया है।

३. ये महानपुरुष देश के किसी एक भाग में नहीं हुए

४. हमारे ऐतिहासिक और धार्मिक स्मारक हमारे प्राचीन वैभव की झलक दिखाते हैं।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. पढ़ी हुई कहानियों को संक्षेप में सुनाना।

२. ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित अभिनय अथवा वार्तालाप में भाग लेना।

३. ऐतिहासिक और धार्मिक स्मारकों को पहचानना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. देश के प्राचीन गौरव के प्रति आदर

२ देश की एकता में विश्वास और गर्व

३. ऐतिहासिक स्थानों व स्मारकों के सदुपयोग और रख-रखाव में सहयोग करने की भावना

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. बच्चों को स्वाभाविक रूप से कहानियाँ पढ़ने का शौक होता है। अतः आप इन कहानियों को स्वतंत्र रूप से कक्षा मे पढ़ाएँ। कहानियाँ पढ़ाते समय इस बात का ध्यान रखे कि आपका उद्देश्य बच्चों को बिल्कुल विधिवत इतिहास पढ़ाना नही है। इन कहानियों को आप कक्षा मे यथासंभव रुचिपूर्ण ढंग से पढ़ाएँ।

२. इस पुस्तक में दी गई सभी कहानियों का संबंध वर्तमान समस्याओं और भावनाओं से है इसलिए आप इन कहानियों को वर्तमान समस्याओं से समन्वय करते हुए पढ़ाएँ।

इस खंड की कहानियाँ पढ़ाने के कुछ अलग-अलग सुझाव आपकी सुविधा के लिए नीचे दिए गए हैं:

कृष्णदेव राय

कक्षा तीन में बच्चों ने दक्षिण भारत के राजा राजेंद्र चोल की कहानी पढ़ी है और जान लिया है कि हमारे इतिहास में दक्षिण भारत के इतिहास का महत्वपूर्ण स्थान है। दक्षिण भारत के एक महान सम्राट की कहानी द्वारा दक्षिण भारत के इतिहास के क्रम को आगे बढ़ाया गया है।

आप इस पाठ को पढ़ाते समय भारत के मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें। इस मानचित्र की सहायता से आप बच्चों को निम्नलिखित बातें अच्छी तरह समझा सकेंगे :

—कृष्णदेवराय के राज्य का विस्तार

—रायचूर, विजयनगर आदि नगरों की स्थिति

—सिंचाई के लिए प्रयोग में आने वाली नदियाँ

कृष्णदेवराय अपनी सेना और जनता में प्रिय था इसकी जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को पाठ पढ़ने के लिए कहें। जब बच्चे पाठ पढ़ लें तो आप बातचीत द्वारा स्पष्ट करें कि वह अपनी सेना और जनता की भलाई के लिए दिन-रात काम करता था।

कृष्णदेवराय रामनवमी का त्यौहार मनाया करता था। यह त्यौहार आज भी लगभग सारे भारत में मनाया जाता है। बच्चे मालूम करें कि उनके शहर अथवा गाँव में यह त्यौहार आजकल किस प्रकार मनाया जाता है।

अकबर

बच्चे अपने दैनिक जीवन में देखते है कि हमारे देश में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, आदि धर्मों के लोगों के साथ एक-सा व्यवहार होता है और वे सुख से रहते है। आप अकबर की कहानी द्वारा बच्चों को बताएँ कि अकबर भी अपने राज्य में सभी धर्मों के लोगो का आदर करता था। उसके दरबार में अन्य धर्मों के लोगों को उच्च पद भी प्राप्त थे। बच्चे जानना चाहेगे कि अकबर के समय मे ऐसा कैसे संभव हुआ। इसे स्पष्ट करने के लिए आप निम्न घटनाएँ बताएँ :

—अकबर का जोधाबाई से विवाह

—इबादतखाने की स्थापना और वहाँ धार्मिक चर्चा

बच्चों को इबादतखाने में होने वाले वार्तालाप का अभिनय करने को कहें। इस अभिनय के लिए आवश्यक सामग्री आप स्वय तैयार करके दें। इसके द्वारा बच्चों को बता सकेंगे कि इस सभा द्वारा उसने लोगों में धार्मिक सहनशीलता का भाव किस प्रकार जाग्रत किया।

शिवाजी

भारत में रहने वालों को स्वतंत्रता प्यारी रही है और आज भी है। बच्चों ने इस पुस्तक में पढ़ा है कि हमने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए किस प्रकार अंग्रेजों से लड़ाई लड़ी और अंत में स्वतंत्रता प्राप्त करके रहे। इस लड़ाई में भारतवासियों ने अंग्रेजों के प्रति अपने व्यवहार से सिद्ध कर दिया कि उन्हे अंग्रेजों से घृणा नहीं है बल्कि वे अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं। यह आदर्श भी हमारा पुराना है यहाँ पर ही आप बताएँ कि शिवाजी मुगलों से लड़ते थे परंतु कुरान, मुसलमान स्त्रियों, बच्चों का कभी भी अनादर नहीं करते थे। इस संबंध में आप शिवाजी के जीवन की कई घटनाएँ बता सकते है।

औरंगजेब ने शिवाजी को किस प्रकार दरबार में बुलाकर अपमानित किया और बंदी बनाया। बच्चे इस घटना का नाटक करें। इसके द्वारा बच्चों में आत्मसम्मान का भाव जाग्रत करें।

शिवाजी का राज्य बताने के लिए आप भारत का मानचित्र अवश्य प्रयोग में लाएँ। इस मानचित्र की सहायता से बच्चे आगरा, पूना, रायगढ़ आदि नगरों की स्थिति को समझ लेंगे।

रणजीतसिंह

हमारी सरकार का आदर्श धार्मिक सहनशीलता और जनता की भलाई है। आप बच्चों से इस संबंध मे बातचीत करें और बच्चों को बताएँ कि यह चीजें हमारे देश के लिए नई नहीं हैं। हमारे इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण है। अकबर, शिवाजी की कहानियों मे भी बच्चों ने यह समझा होगा। ऐसे

ही राजा थे रणजीतसिंह। यह उस समय राज्य करते थे जब देश के बहुत बड़े भाग को अंग्रेज़ अपने अधीन कर चुके थे।

रणजीतसिंह के दरबार के प्रमुख मंत्रियों के नाम बताकर उनकी धार्मिक सहनशीलता बताएँ।

उस समय जनता का राज्य नहीं था परंतु फिर भी जनता की भलाई का ध्यान रखा जाता था इसकी जानकारी कराने के लिए आप बच्चों को पाठ पढ़ने के लिए कहें।

रणजीतसिंह के राज्य का विस्तार बताने के लिए आप भारत के मानचित्र का प्रयोग अवश्य करें।

राजा राममोहन राय

बच्चे अपने दैनिक जीवन में समाज में फैली बहुत-सी बुराइयों और कुरीतियों को देखते हैं। आप सामाजिक कुरीतियों पर बच्चों से बातचीत करें और उन्हें बताएँ कि समाज में कुरीतियाँ दूर करने के लिए अनेक लोगों ने परिश्रम किया है। यहाँ आप बच्चों से समाज सुधारकों के नाम बताने को कहें। बच्चे कुछ नाम बताएँगे। इन बताए गए समाज सुधारकों के कार्य की चर्चा करते हुए आप बताएँ कि राजा राममोहन राय ने किस प्रकार सती प्रथा को समाप्त करने के लिए काम किया। इस जानकारी के लिए बच्चों से पाठ पढ़ने को कहें।

बच्चे जब पाठ पढ़ लें तो आप मालूम करें कि समाज में क्या-क्या कुरीतियाँ थीं। आप बच्चों से यह भी पूछें कि यदि उनसे इन कुरीतियों को दूर करने को कहा जाए तो वे क्या करेंगे।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए प्रश्नों को कराने के साथ-साथ आप निम्न बातें भी देखें :

१. आप बच्चों के व्यवहार में देखें कि क्या उनके व्यवहार में धार्मिक सहनशीलता आई है।

२. क्या बच्चे दूसरी पुस्तकों से कहानियाँ पढ़ते हैं ?

३. आप बच्चों को व्यवहार में देखें कि वे सामाजिक कुरीतियों के प्रति सचेत रहते हैं।